



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

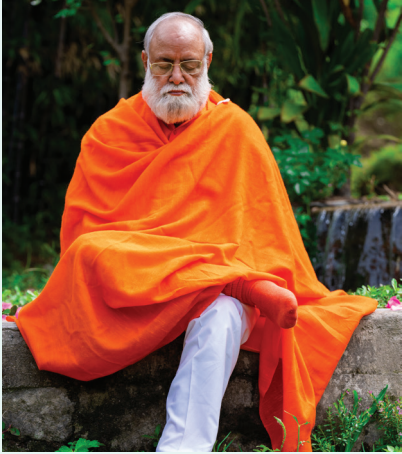
भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक



सोमवार, 23 जून 2025 • वर्ष 6 • अंक 48 • मूल्य: 5 रुपए

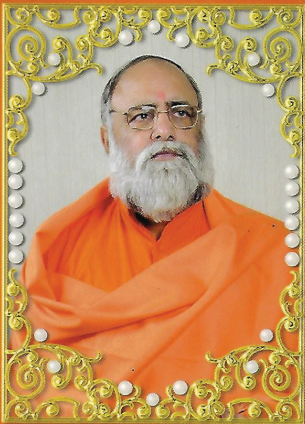
योग का वास्तविक स्वरूप



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने सभी अतिथियों को उनके सामाजिक एवं जनसेवा कार्यों के लिए सम्मान पत्र भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। मंच संचालन संस्था के महामंत्री श्री सुशील वर्मा 'गुरुदास' जी द्वारा प्रभावशाली एवं भावपूर्ण रूप से किया गया।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



प्रभु कृपा से बड़ा कोई विज्ञान नहीं है। इस अलौकिक विज्ञान से ज्योतिष की गणनाओं को भी बदला जा सकता है।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, संप्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

मुक्ति और मोक्ष तब तक प्राप्त नहीं किए जा सकते जब तक हम अपने तन, मन और धन की समस्याओं व कामनाओं से मुक्ति ना हो जाएं।

उपचुनाव से मिली संजीवनी

संकट में फंसी आप को राहत, गुजरात और पंजाब में दिखी वापसी की उम्मीद

@ भारतश्री व्यूरो

दिल्ली चुनाव में करारी हार के बाद आम आदमी पार्टी के भविष्य पर सवाल उठने लगे थे। खुद अरविंद केजरीवाल और मनीष सिंसोदिया जैसे बड़े नेता चुनाव हार गए थे। लेकिन अब उपचुनाव में मिल रही सफलता ने पार्टी को नई ऊर्जा दी है। पंजाब और गुजरात की दो सीटों से आ रहे रुझानों ने साबित कर दिया कि 'आप' अभी खत्म नहीं हुई है। एक समय दिल्ली की सत्ता पर लगातार तीन बार राज करने वाली पार्टी को सिर्फ 22 सीटों पर जीत मिली, जबकि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने रिकॉर्ड 48 सीटें जीतकर राजधानी में 27 साल बाद सरकार बना ली। इस हार के बाद आम आदमी पार्टी और उसके संयोजक अरविंद केजरीवाल के राजनीतिक भविष्य पर सवाल उठने लगे थे।

इस चुनाव में पार्टी के कई दिग्गज नेताओं की हार ने कार्यकर्ताओं और समर्थकों को निराश कर दिया था। खुद अरविंद केजरीवाल और मनीष सिंसोदिया को भी हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद से दोनों नेता मीडिया से दूरी बनाए हुए हैं और पार्टी भी एक तरह से राजनीतिक चुप्पी में चली गई थी।

आप को मिली जबरदस्त बढ़त

देश के चार राज्यों की पांच विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हुए हैं। इनमें से दो सीटों पर आम आदमी पार्टी को जबरदस्त बढ़त मिलती दिख रही है। गुजरात की विसावदर सीट और पंजाब की लुधियाना पश्चिम सीट पर आप के उम्मीदवारों को जनता का जबरदस्त समर्थन मिला है।

विसावदर (गुजरात) में किसान और भ्रष्टाचार बना मुद्दा

गुजरात की विसावदर सीट आप के लिए खास महत्व रखती है। 2022 के विधानसभा चुनाव में यहां से आप के उम्मीदवार भूपेंद्र भाई भायानी ने जीत दर्ज की थी। लेकिन कुछ महीनों बाद उन्होंने पार्टी और विधायक पद से इस्तीफा देकर भाजपा जॉइन कर ली। इसके बाद इस सीट पर उपचुनाव की नौबत आई। इस बार आम आदमी पार्टी ने अपने सीनियर नेता और तेजतर्रार वक्ता गोपाल इटालिया को मैदान में उतारा। खुद अरविंद केजरीवाल ने उनके लिए गुजरात जाकर प्रचार किया। गोपाल इटालिया ने किसानों की समस्याएं और भ्रष्टाचार को मुख्य मुद्दा बनाकर जनता से जुड़ाव बनाया। अब तक के रुझानों में वह भाजपा के किरोट पटेल से 10 हजार से ज्यादा वोटों से आगे चल रहे हैं।



तीसरे विकल्प के रूप में उभर सकती है आप

इन दो सीटों पर जीत मिलने की स्थिति में आम आदमी पार्टी को एक बड़ी नैतिक जीत मिलेगी। इससे पार्टी के कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ेगा और बाकी राज्यों में भी पार्टी को विस्तार करने की हिम्मत मिलेगी। खासकर गुजरात जैसे राज्य में अगर पार्टी अपना असर छोड़ने में कामयाब होती है, तो वह 2027 के लोकसभा चुनाव में भाजपा और कांग्रेस के बीच एक तीसरे विकल्प के रूप में उभर सकती है। दिल्ली में सत्ता गंवाने के बाद आम आदमी पार्टी जिस मुश्किल दौर से गुजर रही थी, उसमें इन दो सीटों से आ रही अच्छी खबरें पार्टी के लिए किसी संजीवनी से कम नहीं हैं। यह साफ है कि पार्टी अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है, बल्कि वह खुद को नए सिरे से गढ़ने की कोशिश कर रही है।

इस जीत को गुजरात में पार्टी के पैर जमाने की दिशा में बड़ी सफलता माना जा रहा है। गोपाल इटालिया की छवि एक जमीनी नेता की रही है, जो युवाओं और किसानों में खासे लोकप्रिय हैं। अगर यह सीट पार्टी के खाते में जाती है, तो गुजरात में 'आप' के पुनर्जीवन की शुरुआत मानी जाएगी।

राज्यसभा से विधानसभा तक

लुधियाना पश्चिम सीट आम आदमी पार्टी के विधायक गुरप्रीत बस्सी गोगी के निधन के बाद खाली हुई थी। यहां से पार्टी ने राज्यसभा सांसद संजीव अरोड़ा को उम्मीदवार बनाया। उनके सामने भाजपा के जीवन गुप्ता और कांग्रेस के भारत भूषण आशु जैसे मजबूत प्रत्याशी मैदान में हैं, लेकिन रुझानों में संजीव अरोड़ा दोनों से अच्छी बढ़त बनाए हुए हैं।

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने इस चुनाव को 'विनम्रता बनाम अहंकार' की लड़ाई बताया। उन्होंने पूरे पंजाब में इस उपचुनाव के लिए पूरी ताकत झोंकी। बताया जा रहा

है कि अगर संजीव अरोड़ा यह चुनाव जीतते हैं तो वे राज्यसभा की सीट छोड़ सकते हैं, जिससे उस सीट पर उपचुनाव होगा। ऐसी संभावना है कि पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल राज्यसभा उपचुनाव लड़ सकते हैं और संसद के सदस्य बन सकते हैं।

यह रणनीति पार्टी के पुनर्गठन की एक झलक देती है, जिससे केजरीवाल दिल्ली से बाहर भी अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत कर सकें।

हार से सबक, अब नई रणनीति

दिल्ली में करारी हार के बाद आम आदमी पार्टी ने अपने अंदर झांकने का काम किया है। पार्टी को यह अहसास हुआ कि सिर्फ काम गिनाने से चुनाव नहीं जीते जा सकते, बल्कि जमीनी जुड़ाव और लगातार संवाद भी जरूरी है। गुजरात और पंजाब में जीत की ओर बढ़ती पार्टी यह संकेत दे रही है कि वह अपनी पुरानी गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़ रही है।



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



दिल्ली विश्वविद्यालय के फॉर्म ने खड़े किए गंभीर सवाल मातृभाषा और जाति को लेकर विवाद



@ आनंद सिंह

दिल्ली विश्वविद्यालय (DU) के अंडरग्रेजुएट एडमिशन फॉर्म को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। फॉर्म में मातृभाषा के कॉलम में “मुस्लिम” को भाषा के रूप में दर्शाने और जाति की सूची में आपत्तिजनक व जातिसूचक शब्दों के प्रयोग ने शिक्षा जगत और सोशल मीडिया में तीखी प्रतिक्रियाएं पैदा कर दी हैं। कई प्रोफेसरों और छात्रों ने इसे “इस्लामोफोबिक” और “जातिवादी मानसिकता” का उदाहरण बताया है।

क्या है पूरा मामला ?

दिल्ली विश्वविद्यालय में अंडरग्रेजुएट कोर्स में दाखिले के लिए छात्रों को एक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन फॉर्म भरना होता है। हाल ही में इस फॉर्म में कुछ विवरणों को लेकर विवाद छिड़ गया।

मातृभाषा कॉलम में मुस्लिम

फॉर्म के एक सेक्शन में जहां छात्रों को अपनी मातृभाषा भरनी होती है, वहां “उर्दू” की जगह “मुस्लिम” का विकल्प दिख रहा था। आलोचकों का कहना है कि भाषा को धर्म से जोड़ना खतरनाक और विभाजनकारी सोच का संकेत है।

जातियों की विस्तृत सूची

फॉर्म में जैसे ही छात्र “OBC” कैटेगरी सिलेक्ट करते हैं, वैसे ही जातियों की एक लंबी सूची खुलती है, जिसमें जातिसूचक शब्दों की भरमार है। प्रोफेसरों का कहना है कि यह तरीका न केवल असंवेदनशील है, बल्कि यह छात्रों की गरिमा के साथ खिलवाड़ करता है।

‘बिहारी’ को भाषा बताना

मातृभाषा के विकल्पों में भोजपुरी, मैथिली, मगही जैसी भाषाओं की जगह “बिहारी” शब्द दिया गया है। भाषाविदों और छात्रों का मानना है कि “बिहारी” कोई भाषा नहीं बल्कि क्षेत्रीय पहचान है, और इसका प्रयोग लापरवाही या अज्ञानता दर्शाता है।

सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है नाराजगी

फॉर्म के स्क्रीनशॉट वायरल होने के बाद सोशल मीडिया पर भी तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आईं। यूजर्स ने सवाल उठाया कि एक ऐसे विश्वविद्यालय में, जो देशभर से छात्रों को बुलाता है, इस तरह की भाषा और जाति



“डीयू का यह फॉर्म इस्लामोफोबिक है। उर्दू को हटाकर मुस्लिम को मातृभाषा बताना न केवल तथ्यात्मक गलती है, बल्कि एक सांप्रदायिक सोच को दर्शाता है। यह शर्मनाक है कि संविधान में मान्यता प्राप्त भाषा को नजरअंदाज किया गया है। 3 लाख से अधिक छात्र यह फॉर्म भरते हैं, ऐसे में इस तरह की लापरवाहियों का असर व्यापक हो सकता है।”

आभा देव हबीब (एसोसिएट प्रोफेसर)

“यह वही सामाजिक व्यवस्था मजबूत कर रहा है जिसे हम तोड़ना चाहते हैं। हर जाति को नाम से चुनवाना न केवल अव्यवहारिक है, बल्कि यह उम्मीदवार की गरिमा के खिलाफ भी है। एक बेहतर विकल्प यह होता कि बस इतना पूछा जाता कि छात्र किस आरक्षण श्रेणी में आता है, और क्या वह केंद्रीय सूची में शामिल है या नहीं।”

नतिका गुप्ता (प्रोफेसर)

आधारित गड़बड़ियां कैसे हो सकती हैं?

कई छात्रों ने इसे “भेदभाव को संस्थागत रूप देना” बताया, तो कुछ ने लिखा कि “डीयू जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से ऐसी चूक की उम्मीद नहीं थी।”

डीयू प्रशासन का जवाब आया सामने

विवाद के बढ़ते ही डीयू प्रशासन की ओर से सफाई सामने आई है।

डीयू के पीआरओ अनूप लाथर ने इसे “क्लेरिकल

मिस्टेक” बताया। उन्होंने कहा “यह एक तकनीकी चूक थी, जिसे पहचान कर तुरंत सुधार लिया गया है। हम छात्रों को आश्वस्त करते हैं कि भविष्य में इस तरह की गलती दोहराई न जाए, इसके लिए उपयुक्त कदम उठाए जाएंगे।”

क्या यह सिर्फ तकनीकी गलती थी ?

हालांकि विश्वविद्यालय ने इसे “क्लेरिकल मिस्टेक” कहकर टालने की कोशिश की है, लेकिन शिक्षाविदों का मानना है कि यह तकनीकी नहीं बल्कि वैचारिक गलती है। यह घटना हमारे शैक्षणिक ढांचे में मौजूद गहरे पूर्वाग्रहों की ओर इशारा करती है, जिसे अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दिल्ली विश्वविद्यालय का यह विवाद केवल एक एडमिशन फॉर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश की उच्च शिक्षा संस्थानों में मौजूद सामाजिक संवेदनशीलता की परीक्षा भी है। धर्म, भाषा और जाति को लेकर जिस तरह की लापरवाही दिखाई गई, वह चिंताजनक है। हालांकि विश्वविद्यालय ने सुधार का भरोसा दिलाया है।

ईरान- इजराइल के बीच युद्ध थमा या ठहरा?



@ आनंद मीणा

इजराइल और ईरान के बीच चल रहा तनाव अब खत्म हो चुका है। दोनों देशों के बीच 12 दिन से लड़ाई चल रही थी। इसे रोकने का काम अमेरिका ने किया है। ऐसा दावा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने किया है।

भारतीय समय के हिसाब से सुबह करीब 3:00 बजे ट्रंप ने सीज़फायर का ऐलान किया। कुल मिलाकर, ट्रंप ने उसी युद्ध को खत्म करने का दावा किया है जिसे इजराइल ने शुरू किया था। अब उन्होंने 'MEGA' का नारा दिया है यानी "Make Iran Great Again"।

बारूद से चल रहा यह युद्ध क्या वास्तव में सीज़फायर तक पहुंच पाया है?

तारीख 23 जून 2025, रात के करीब 9:30 बजे, क़तर की राजधानी दोहा में धमाके की आवाज़ सुनाई दी। खबर मिली कि ईरानी सेना ने क़तर में मिसाइलें दागी हैं। ये मिसाइलें क़तर में अमेरिकी मिलिट्री बेस को निशाना बना रही थीं। क़तर के अल-उदीद एयरबेस पर हमला किया गया। यह एयरबेस अमेरिका, ब्रिटेन और अन्य देशों के सैनिकों का एक प्रमुख ठिकाना है।

यह हमला एक दिन पहले अमेरिका द्वारा किए गए तीन परमाणु ठिकानों पर हमले का जवाब था। ईरान ने

दावा किया कि छह मिसाइलें बेस पर गिरिं। लेकिन Reuters को दिए बयान में अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि इनका बेस पर कोई असर नहीं हुआ।

वहीं, क़तर सरकार ने बताया कि एक मिसाइल ज़रूर लगी, लेकिन कहीं भी जान-माल का नुकसान नहीं हुआ है। ईरान ने पहले से ही क़तर को इस हमले की चेतावनी दे दी थी।

हमले के बाद क़तर, बहरीन, कुवैत और संयुक्त अरब अमीरात (UAE) ने अपने एयरस्पेस को कुछ समय के लिए बंद कर दिया। कई एयरलाइंस ने उड़ानें रद्द कर दीं।

ईरान के सरकारी टीवी ने इस हमले को अमेरिका के हमले का "शक्तिशाली और सफल" जवाब बताया। इराक में अमेरिका के ऐन अल-असद बेस को भी संभावित हमले के चलते हाई अलर्ट पर रखा गया।

ट्रंप का ऐलान और सीज़फायर की घोषणा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इस हमले को "बेहद कमजोर" बताकर इसका मजाक उड़ाया। उन्होंने कहा कि ईरान की पहले से दी गई चेतावनी की वजह से कोई नुकसान नहीं हुआ। हमले के कुछ ही देर बाद सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म TRUTH पर ट्रंप ने एक ऐलान किया। उन्होंने लिखा, "सबको बधाई। ईरान और इजराइल के बीच पूर्ण और अंतिम

सीज़फायर पर सहमति बन गई है। दोनों देश मेरे पास आए और कहा — 'पीस'। मुझे पता था, वक्त अब आ गया है। सीज़फायर 6 घंटे के अंदर शुरू होगा और पहले ईरान इसे फॉलो करेगा। इसके बाद 12 घंटे के भीतर इजराइल भी सीज़फायर में शामिल हो जाएगा। 24 घंटे बाद युद्ध को आधिकारिक तौर पर समाप्त मान लिया जाएगा।"

ट्रंप ने दोनों देशों की तारीफ करते हुए कहा कि यह युद्ध सालों तक चल सकता था और पूरा मिडिल ईस्ट तबाह हो सकता था, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा और न ही कभी होगा।

ईरान की प्रतिक्रिया और विरोधाभास

इस सीज़फायर के ऐलान के बाद ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराची ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने लिखा, "जैसा कि ईरान ने बार-बार स्पष्ट किया है, इजराइल ने ईरान पर युद्ध शुरू किया था, न कि ईरान ने। अभी तक किसी भी युद्धविराम या सैन्य अभियानों की समाप्ति पर कोई समझौता नहीं हुआ है।" उन्होंने यह भी कहा कि बशर्ते इजराइल ईरानी लोगों पर अपने अवैध हमले तहरान समय के मुताबिक सुबह 4:00 बजे तक बंद कर दे, तभी ईरान अपनी प्रतिक्रिया रोकने का इरादा रखता है।

एक अन्य ट्वीट में अराची ने लिखा कि इजराइल

द्वारा किए गए हमलों के जवाब में ईरानी सशस्त्र बलों का अभियान सुबह 4:00 बजे तक जारी रहा। उन्होंने सभी ईरानियों के साथ मिलकर सेना को धन्यवाद दिया।

इजराइल की चुप्पी और जारी हमले

दूसरी ओर, इजराइल ने अब तक सीज़फायर को लेकर किसी भी तरह की पुष्टि नहीं की है। हालांकि, Reuters की रिपोर्ट के अनुसार सीज़फायर ऐलान के बाद भी ईरान की ओर से मिसाइल हमले जारी हैं।

इजराइली डिफेंस फोर्सेज के मुताबिक, ईरान ने बीते एक घंटे में तीन बार इजराइल पर मिसाइलें दागी हैं। इन हमलों में तीन नागरिकों की मौत हो गई है। तेल अवीव में लगातार साइरन बज रहे हैं और लोगों को सेफ हाउस में भेजा जा रहा है।

अब क्या आगे?

अब बड़ा सवाल यह है कि यह सीज़फायर कितने दिन तक टिकेगा। क्या ट्रंप की मध्यस्थता वाकई असरदार रही है? या फिर यह सिर्फ एक कूटनीतिक दांव था? इस बीच, नीदरलैंड के द हेग शहर में नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन (NATO) का समिट शुरू हो रहा है, जहां राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी मौजूद रहेंगे।

दुनिया की नजरें अब इजराइल और ईरान पर टिकी हैं कि क्या यह सीज़फायर वास्तव में युद्ध का अंत है या महज एक ठहराव?



योग का वास्तविक स्वरूप

शरीर से कहीं परे

आज के युग में योग को केवल शारीरिक व्यायाम समझा जाता है, परंतु यह एक भ्रम है। योग केवल व्यायाम नहीं है, यह कोई साधारण शारीरिक क्रिया नहीं है। योग का वास्तविक आयाम तो मन, चित्त और बुद्धि से भी कहीं परे है। जब मन की शक्ति से भी योग की प्राप्ति संभव नहीं है, तो भला किसी शारीरिक क्रिया से यह कैसे संभव हो सकता है?

महर्षि पतंजलि ने अपने अमर योगसूत्रों में सर्वप्रथम ही योग की सटीक व्याख्या इस प्रकार की है: 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' - अर्थात् हमारे चित्त की समस्त वृत्तियों का वश में हो जाना, उनका निरोध हो जाना ही योग है। इसी गूढ़ सत्य को भगवद्गीता (6.18) में श्रीकृष्ण ने और भी सुन्दर भाषा में समझाया है कि "भली भांति वश में किया हुआ चित्त जब अपने स्वतःसिद्ध स्वरूप में स्थित हो जाता है, और स्वयं संपूर्ण पदार्थों से निःस्पृह हो जाता है, उसी क्षण वह योगी हो जाता है।"

गीता में योग की बहुआयामी व्याख्या

श्रीकृष्ण ने गीता में योग को अनेकों प्रकार से समझाया है। प्रत्येक व्याख्या एक नया आयाम खोलती है।

गीता (2.48) में वर्णित है कि 'समत्वं योग उच्यते' अर्थात् समत्व ही योग है। हर अवस्था में, प्रत्येक कर्म को बिना किसी आसक्ति के करते हुए, समता के भाव को निरंतर बनाए रखना, कार्य के सिद्ध होने अथवा सिद्ध न होने - इन दोनों अवस्थाओं में समता का भाव बनाए रखना ही योग है। समता का भाव प्राप्त होने पर ही चित्त की वृत्तियां रुक जाती हैं, क्योंकि बिना आसक्ति के किया गया कर्म कभी बांधता नहीं है। केवल वही कर्म हमें कर्मफल से बांधता है जिसे आसक्तिपूर्वक किया गया हो। इसके

विपरीत आसक्तिरहित कर्म जीवन-मुक्त अवस्था की ओर ले जाता है।

श्रीकृष्ण गीता में आगे कहते हैं: 'योगः कर्मसु कौशलम्' - अर्थात् कर्मों में कुशलता ही योग है। बिना आसक्ति के कर्मों को करना ही वह कुशलता है जिससे वास्तविक योग की प्राप्ति होती है।

तत्त्वज्ञानी गुरु के बिना योग-सिद्धि संभव नहीं

परंतु यहां एक अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य है - योग की सिद्धि गुरु-कृपा के बिना संभव नहीं है। श्रीमद्देवी भागवत महापुराण में भी इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि योग में सिद्धि प्राप्त करने के लिए गुरु से प्राप्त मंत्र अनिवार्य हैं। गुरु-कृपा के बिना योग सिद्ध नहीं हो सकता।

देवीभागवत (7.35.60) में भगवती मां दुर्गा स्वयं अपने मुखारविंद से यह उपदेश देती हैं:

"मंत्राभ्यास-योग के द्वारा तत्व का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

योग के बिना मंत्र सिद्ध नहीं होता और मंत्र के बिना योग सिद्ध नहीं होता। गुरु के उपदेश से ही यह योग जाना जा सकता है, इसके विपरीत

करोड़ों शास्त्रों के द्वारा भी यह प्राप्त नहीं किया जा सकता"

गीता में श्रीकृष्ण भी अर्जुन से स्पष्ट कहते हैं: 'तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया। उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः' अर्थात् तत्त्वज्ञान को तत्त्वदर्शी ज्ञानी महापुरुषों के पास जाकर समझ। तत्त्वदर्शी गुरु को साष्टांग दंडवत प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और सरलतापूर्वक प्रश्न करने से ही तत्त्वज्ञान का उपदेश मिलता है। तत्त्वज्ञान से ही योग सिद्ध होता है।

इसी गूढ़ सत्य को पातंजलि योगसूत्र (1.23) में महर्षि पतंजलि ने 'ईश्वरप्रणिधान' कहकर समझाया है। ईश्वर के शरणापन्न अर्थात् शरणागत हो जाने का नाम 'ईश्वरप्रणिधान' है। उसके नाम, रूप, लीला, धाम, गुण और प्रभाव आदि का श्रवण, कीर्तन और मनन करना, समस्त कर्मों को भगवान के

समर्पण कर देना, अपने को भगवान के हाथ का यंत्र बनाकर जिस प्रकार वह नचावे, वैसे ही नाचना, उसकी आज्ञा का पालन करना, उसी में अनन्य प्रेम करना - ये सभी ईश्वरप्रणिधान के अंग हैं।

गुरु-प्रसाद से श्रीराम की योग-सिद्धि

योग में सिद्धि के लिए गुरु का मार्गदर्शन सर्वोपरि है। गुरु ही जब प्रसन्न होते हैं तो उन समस्त दिव्य विद्याओं का ज्ञान सहजता से प्रदान कर देते हैं जिन्हें प्राप्त करने के लिए योगीजन जन्मों-जन्मों की कठोर तपस्या करते हैं।

वाल्मीकि रामायण (1.22) में एक अद्भुत घटना का वर्णन मिलता है कि सरयू नदी के पावन तट पर गुरु विश्वामित्र ने श्रीराम को उनकी निष्कपट सेवा-भाव और अनुपम सरलता से अत्यंत प्रसन्न होकर 'बल' और 'अतिबल' नामक दो अनूठी मंत्र-विद्याएं प्रदान कीं जिनसे सहज ही श्रीराम को योग सिद्धि प्राप्त हो गई।

इन दिव्य मंत्र विद्याओं का वर्णन करते हुए ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने कहा कि 'बलात्त्वतिबला चैव सर्वज्ञानस्य मातरौ' अर्थात् 'बल' और 'अतिबला' - ये दोनों विद्या ही सर्व ज्ञान की जननी हैं। इनके पाठ से भूख, प्यास, निद्रा पर विजय मिलती है, किसी प्रकार की थकान, ज्वर नहीं होता, शरीर के स्वरूप में कभी कोई विकृति भी नहीं आती।

इन अद्भुत विद्याओं से मिली दिव्य शक्तियों के बल पर ही श्रीराम ने अपना संपूर्ण मनोरथ पूर्ण किया था एवं मां सीता को अयोध्या वापस लाए थे। यह है गुरु-कृपा का अलौकिक चमत्कार - जो योगी जन्मों-जन्मों की तपस्या से पाते हैं, वह गुरु की कृपा से क्षणभर में सहज ही मिल जाता है। यह घटना दर्शाती है कि परमात्मा स्वरूप श्रीराम ने भी गुरु की शरण ली, जिससे योग-सिद्धि सहज सुलभ हुई।



कश्मीर की सियासत का एक ऐतिहासिक मोड़

ब्रिटिश राज के अंतिम वर्षों में भारत की राजनीति में जिस तरह साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण हो रहा था, उसी का असर जम्मू-कश्मीर की राजनीति पर भी पड़ा। मुस्लिम बहुल राज्य होने के कारण मोहम्मद अली जिन्ना की नजरें कश्मीर पर थीं। वह चाहते थे कि कश्मीर की प्रमुख राजनीतिक पार्टी नेशनल कॉन्फ्रेंस का विलय मुस्लिम लीग में हो जाए, ताकि कश्मीर को पाकिस्तान का हिस्सा बनाने की राह आसान हो सके। लेकिन शेख मोहम्मद अब्दुल्ला, जो उस समय कश्मीर की राजनीति के सबसे प्रखर नेता माने जाते थे, ने जिन्ना के इस प्रस्ताव को सिर से नकार दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि नेशनल कॉन्फ्रेंस मुसलमानों की पार्टी नहीं, बल्कि पूरे जम्मू-कश्मीर की एक धर्मनिरपेक्ष और जनहितैषी पार्टी है। उन्होंने जिन्ना को यह भी समझाने की कोशिश की कि कश्मीर की समस्या धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक है।

शेख अब्दुल्ला का यह इनकार मोहम्मद अली जिन्ना को नागवार गुजरा। इतिहासकारों और खुद शेख अब्दुल्ला की आत्मकथा 'आतिशे-घिनार' के अनुसार, जिन्ना इस अस्वीकृति से इतने नाराज हुए कि उन्होंने कश्मीर में एक अलग राजनीतिक पार्टी बनवाने की योजना बनाई। उन्होंने मीर वायज़ यूसुफ शाह को इस काम के लिए आगे किया और मुस्लिम लीग की तरफ पर एक नई पार्टी खड़ी की गई, जिसका नाम था मुस्लिम कॉन्फ्रेंस। दिलचस्प बात यह थी कि यह वही नाम था, जो शेख अब्दुल्ला की पार्टी का शुरुआती नाम था, यानी उन्होंने न केवल अलग पार्टी बनाई, बल्कि उसका नाम भी शेख अब्दुल्ला की पार्टी से उधार लिया।

इस मुस्लिम कॉन्फ्रेंस की राजनीतिक दिशा मुस्लिम लीग से मेल खाती थी। इसका मुख्य उद्देश्य कश्मीर को पाकिस्तान में शामिल कराना था। इस पार्टी ने धार्मिक भावनाओं को भड़काकर आम जनता में पैठ बनाने की कोशिश की। वहीं, नेशनल कॉन्फ्रेंस धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय की बात करती रही। दोनों दलों के बीच यह मतभेद कश्मीर की राजनीति को दो ध्रुवों में बांटने वाला साबित हुआ। मुस्लिम कॉन्फ्रेंस ने अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए कश्मीर के महाराजा हरि सिंह का खुलकर समर्थन किया। इस पार्टी ने हरि सिंह को "धरती पर खुदा का प्रतिनिधि" (नुमाइंद) कहकर संबोधित किया, जो एक तरह से राजा के निरंकुश शासन को धार्मिक वैधता देने का प्रयास था।

गौरतलब है कि महाराजा हरि सिंह की अपनी महत्वाकांक्षा थी। वह चाहते थे कि भारत और पाकिस्तान से अलग, जम्मू-कश्मीर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में रहे और वह स्वयं इसके शासक बने रहें। लेकिन हालात तेजी से बदले। जब 1947 में पाकिस्तान ने कबायलियों के जरिये कश्मीर पर हमला कराया, तो हरि सिंह को भारतीय सेना की मदद लेनी पड़ी। इसके बदले में उन्हें जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय करना पड़ा। इस पूरे घटनाक्रम में शेख अब्दुल्ला और नेशनल कॉन्फ्रेंस की भूमिका निर्णायक रही। शेख ने ना केवल पाकिस्तान के प्रस्तावों को ठुकराया, बल्कि भारतीय संविधान में कश्मीर की स्वायत्तता सुनिश्चित करने की लड़ाई भी लड़ी। वहीं मुस्लिम कॉन्फ्रेंस, जिन्ना के कहने पर काम करती रही और अंततः पाकिस्तान-समर्थक गुट में तब्दील हो गई।

नितिन ठाकुर

1 जुलाई से रेल यात्रा महंगी



@ अनुराग पाठक

1 जुलाई 2025 से भारतीय रेलवे यात्रियों के लिए एक नया अध्याय लेकर आ रही है। नॉन-एसी मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों के किराए में 1 पैसे प्रति किलोमीटर और एसी क्लास के किराए में 2 पैसे प्रति किलोमीटर की वृद्धि की जा रही है। यह बदलाव भले ही आंकों में मामूली लगे, लेकिन इसका व्यापक असर देश के करोड़ों यात्रियों पर पड़ेगा। रेल मंत्रालय के मुताबिक, यह निर्णय पिछले पांच वर्षों से किराया स्थिर रहने और बढ़ती परिचालन लागत को देखते हुए लिया गया है। रेलवे जैसी विशाल प्रणाली, जो रोजाना लाखों यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाती है, उसके रख-रखाव और इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता स्वाभाविक है।

लेकिन सवाल यह है कि क्या यह बढ़ोतरी वाजिब है? जहां एक ओर सरकार इसे 'संतुलित बढ़ोतरी' कह रही है, वहीं आम यात्री के लिए यह एक और आर्थिक दबाव बन सकता है। खासकर वे लोग जो लंबी दूरी की यात्रा एसी डिब्बों में करते हैं – उनके लिए 1000 किमी के सफर पर 20 रुपये तक की अतिरिक्त लागत मामूली न होकर प्रतीकात्मक रूप से बोझ बन सकती है। इसका आत्मिक पहलू यह है कि रेलवे ने 500 किमी तक की सेकेंड क्लास यात्रा के किराए में कोई बदलाव नहीं

किया है। यह निर्णय ग्रामीण व छोटे शहरों के यात्रियों को राहत पहुंचा सकता है, जिनकी निर्भरता रेलवे पर सबसे अधिक है।

1 जुलाई से IRCTC पर तत्काल टिकट बुक करने के लिए आधार वेरिफिकेशन अनिवार्य कर दिया गया है और 15 जुलाई से आधार से जुड़ा OTP वेरिफिकेशन भी लागू होगा। यह कदम बेशक दलालों और फर्जी बुकिंग एजेंटों की मनमानी पर अंकुश लगाने के लिए है, लेकिन सवाल यह भी उठता है कि क्या रेलवे की तकनीकी व्यवस्था इतनी सुचारू है कि आधार आधारित वेरिफिकेशन हर बार समय पर और बिना बाधा के हो सके? इसके अलावा, डिजिटल साक्षरता और आधार से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहे वर्गों के लिए यह नई प्रक्रिया एक और सिरदर्द बन सकती है।

हमारे दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि रेलवे सुधारों की जरूरत है, लेकिन हर सुधार को जनसहभागिता, पारदर्शिता और सर्वसुलभता के सिद्धांतों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। किराए में बढ़ोतरी हो या बुकिंग की तकनीकी जटिलताएं – इनका समाधान यात्रियों की सुविधा और विश्वास को केंद्र में रखकर होना चाहिए।

रेलवे भारत की जीवनरेखा है। इसके हर बदलाव में आम आदमी की नब्ब का ध्यान रखना उतना ही ज़रूरी है जितना ट्रेक पर समय से ट्रेन दौड़ाना।

जुबानी तीर

“



जल्द ही भारत में ऐसा वक्त आएगा जब अंग्रेजी बोलने वाले खुद में शर्मिंदगी महसूस करेंगे। ऐसे समाज का निर्माण अब दूर नहीं है। उन्होंने कहा था कि किसी विदेशी भाषा में आप अपनी संस्कृति, धर्म तथा इतिहास को नहीं समझ सकते। हमारे देश की भाषाएं हमारी गहना है और 2047 में भारत का दुनिया में शीर्ष पर रहने के लिए हमारी भाषाओं का अहम योगदान होगा।

अमित शाह (केंद्रीय गृह मंत्री)

“



अंग्रेजी शर्म नहीं, शक्ति है। अंग्रेजी जंजीर नहीं – जंजीरें तोड़ने का औजार है। BJP-RSS नहीं चाहते कि गरीब बच्चा अंग्रेजी सीखे। वो नहीं चाहते हैं कि वह पढ़-लिखकर सवाल पूछें, आगे बढ़ें तथा बराबरी करें। आज के समय में अंग्रेजी उतनी ही जरूरी है जितनी आपकी मातृ भाषा। क्योंकि यही रोजगार दिलाएगी और आत्मविश्वास भी बढ़ाएगी। भारत की हर भाषा में आत्मा है, संस्कृति है, ज्ञान है।

राहुल गांधी (नेता प्रतिपक्ष)

“



भाजपा की अंदरूनी राजनीति की शर्मनाक लड़ाई में, अब कौशांबी में दो भाजपाईं उप मुख्यमंत्री, दो समाज के लोगों को आपस में लड़वा रहे हैं। पहले एक उप मुख्यमंत्री ने नाईसाफी करते हुए 'पाल' समाज के लोगों को मोहरा बनाया, फिर दूसरे उप मुख्यमंत्री ने अपने उस समाज के नाम पर झूठी सहानुभूति दिखाई, जो समाज इन दोनों के 'ऊपर वालों' को नहीं भाता है, इसीलिए पीछे से वो भी सक्रिय हो गए।

अखिलेश यादव (सपा प्रमुख)

दिमाग को दें राहत तनाव दूर करने के आयुर्वेदिक उपाय

@ डॉ. महिमा मक्कर

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में “तनाव” (Stress) एक आम समस्या बन गई है। यह एक ऐसा मानसिक और शारीरिक दबाव है जो हमारे स्वास्थ्य, सोचने की क्षमता और रिश्तों पर बुरा प्रभाव डालता है। नींद न आना, चिड़चिड़ापन, थकावट, सिरदर्द, एकाग्रता की कमी, और डिप्रेशन जैसे लक्षण इसके सामान्य संकेत हैं। आधुनिक चिकित्सा जहां तनाव को दबाने के लिए दवाइयों का सहारा लेती है, वहीं आयुर्वेद इसे जड़ से दूर करने पर जोर देता है। आयुर्वेद एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति है जो मन, शरीर और आत्मा के संतुलन को प्राथमिकता देती है। इसमें जड़ी-बूटियों, योग, प्राणायाम, आहार और दिनचर्या के माध्यम से तनाव को दूर किया जा सकता है। इस लेख में हम जानेंगे कि आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से तनाव क्यों होता है और इसे दूर करने के सबसे प्रभावी उपाय क्या हैं।

तनाव की आयुर्वेदिक व्याख्या

आयुर्वेद के अनुसार शरीर में तीन प्रकार की दोष होते हैं: वात, पित्त और कफ। जब ये दोष संतुलित रहते हैं, तब व्यक्ति स्वस्थ रहता है। लेकिन मानसिक या शारीरिक असंतुलन की स्थिति में ये दोष बिगड़ जाते हैं और रोग उत्पन्न होता है। तनाव मुख्यतः वात दोष की अधिकता के कारण होता है। वात का असंतुलन मस्तिष्क को अति सक्रिय कर देता है, जिससे बेचैनी, भय, अनिद्रा और चिंता जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

तनाव दूर करने के आयुर्वेदिक उपाय

अश्वगंधा – तनाव का सबसे प्रभावी शमन

अश्वगंधा एक शक्तिशाली “एडाप्टोजेन” है जो शरीर को मानसिक तनाव से लड़ने में सहायता करता है। यह मानसिक थकान को दूर करता है, नींद में सुधार लाता है और कोर्टिसोल (Stress Hormone) के स्तर को नियंत्रित करता है।

कैसे लें?

1/2 चम्मच अश्वगंधा चूर्ण को गर्म दूध या पानी के साथ रात को सोने से पहले लें।

सावधानी:

गर्भवती महिलाएं डॉक्टर की सलाह से ही इसका सेवन करें।

ब्राह्मी – मानसिक शक्ति बढ़ाने वाली जड़ी-बूटी

ब्राह्मी मस्तिष्क के लिए टॉनिक की तरह काम करती है। यह मेमोरी बढ़ाती है, मानसिक स्पष्टता लाती है और चिंता को दूर करती है।

सेवन विधि:

ब्राह्मी तेल से सिर की मालिश करें या ब्राह्मी चूर्ण को शहद के साथ लें।

योग
और प्राणायाम
– आयुर्वेदिक
जीवनशैली का अभिन्न
हिस्सा

तनाव से राहत पाने के लिए योग और प्राणायाम अत्यंत प्रभावी हैं। यह न केवल शरीर को लचीला बनाते हैं, बल्कि मन को शांत करने में भी सहायक होते हैं।

लाभकारी योगासन:

शवासन (Corpse Pose): गहरी शांति देता है।

बालासन (Child Pose): मानसिक शांति के लिए उपयोगी।

सुखासन में ध्यान: एकाग्रता और मानसिक संतुलन बढ़ाता है।

प्राणायाम:

अनुलोम-विलोम: नाड़ी शुद्धि करता है।

भ्रामरी: मन को शांत करता है, नींद बेहतर करता है।

नाड़ी शोधन प्राणायाम: वात दोष को संतुलित करता है।

अभ्यंग – आयुर्वेदिक तेल मालिश

रोजाना तिल के तेल या नारियल तेल से पूरे शरीर की मालिश (Abhyanga) करने से नसों को शांति मिलती है और मस्तिष्क तनावमुक्त होता है।

कब करें: नहाने से 30 मिनट पहले।

तेल: वात-शामक तेल जैसे तिल का तेल या ब्राह्मी तेल।



सत्त्विक
आहार –
शुद्ध, हल्का और
पौष्टिक भोजन

तनाव कम करने में आहार की अहम भूमिका होती है। आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से, ताजे, हल्के, और आसानी से पचने वाले सात्विक आहार को प्राथमिकता देनी चाहिए।

क्या खाएं:

खिचड़ी, मूंग दाल, घी, ताजे फल (जैसे केला, सेब), सूखे मेवे (भीगे हुए बादाम)

तुलसी या अदरक की चाय

क्या न खाएं:

अधिक मिर्च-मसाले वाला भोजन

कैफीन, शराब और प्रोसेस्ड फूड

नींद की गुणवत्ता सुधारें – अनिद्रा तनाव को बढ़ाने का मुख्य कारण है। आयुर्वेद में अच्छी नींद को जीवन का स्तंभ (Pillar) माना गया है। रात को समय पर सोना और सुबह सूर्योदय से पहले उठना मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

सुझाव:

रात को सोने से पहले गुनगुना दूध पिएं। मोबाइल और टीवी से दूरी बनाएं। ब्राह्मी या जटामांसी युक्त आयुर्वेदिक चूर्ण का सेवन करें।

ध्यान और मंत्र जाप – ध्यान और मंत्र जाप से मस्तिष्क की गतिविधियां नियंत्रित होती हैं और दिमाग में डोपामिन, सेरोटोनिन जैसे रसायन संतुलित रहते हैं जो मूड को बेहतर बनाते हैं। रोजाना 15-20 मिनट का ध्यान जीवन में स्थिरता और मानसिक शांति लाता है।

सुगंध चिकित्सा

आयुर्वेद में प्राकृतिक सुगंधों को भी मन को शांत करने का एक प्रभावी तरीका माना गया है। लैवेंडर, चंदन और तुलसी के तेल से कमरे को सुगंधित करें। सुगंधित दीपक जलाना या गर्म पानी में तेल की कुछ बूंदें डालना लाभदायक हो सकता है।

शंखपुष्पी और जटामांसी – मस्तिष्क टॉनिक

शंखपुष्पी: एक उत्तम मस्तिष्कवर्धक औषधि, जो तनाव, चिंता, चिड़चिड़ापन दूर करती है।

जटामांसी: तंत्रिका तंत्र को शांत करती है और नींद लाने में सहायक है।

दोनों को चूर्ण या सिरप के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

संत भीखा साहब का पावन जीवन

संतों का सान्निध्य आत्मा को शांति देता है, उनके शब्द हृदय को परमात्मा के प्रेम से जोड़ते हैं और उनकी दृष्टि सांसारिक बंधनों को तोड़ देती है। संत भीखा साहब का जीवन ऐसी ही दिव्यता का प्रतीक है। रामनाम की भक्ति में लीन, उन्होंने न केवल स्वयं को परमात्मा से जोड़ा, बल्कि असंख्य लोगों को भी आध्यात्मिक पथ पर प्रेरित किया। उनका जीवन एक तपस्वी, भक्त और सिद्ध संत का उदाहरण है, जिनके शब्द आज भी भक्तों के हृदय में गूंजते हैं। यह लेख उनके पवित्र जीवन की गाथा को सरल और भक्ति-भाव से प्रस्तुत करता है।

प्रारंभिक जीवन और वैराग्य की ज्योत

संत भीखा साहब का जन्म विक्रम संवत् 1770 (लगभग 1713 ईस्वी) में उत्तर भारत के आजमगढ़ जनपद के मुहम्मदाबाद मंडल के खानपुर बोहाना गांव में एक चौबे ब्राह्मण परिवार में हुआ। बचपन से ही उनका स्वभाव सरल और सात्विक था। जहां अन्य बच्चे खेल-कूद में रमते थे, वहीं छोटे भीखा का मन साधु-संतों की संगति में रमता था। सात-आठ वर्ष की आयु में ही वे गांव में आने वाले संतों के पीछे चल पड़ते, उनके उपदेश सुनते और उनके साथ समय बिताते।

उनके हृदय में वैराग्य की भावना धीरे-धीरे गहरी होती गई। बारह वर्ष की आयु में उनका उपनयन संस्कार हुआ, और परिवार ने उन्हें गृहस्थ जीवन में बांधने का प्रयास किया। विवाह का प्रस्ताव रखा गया, पर भीखा मौन रहे। लोग समझे कि वे सहमत हैं, और तिलक के दिन घर में उत्सव की तैयारी शुरू हो गई। मंगल गीत गाए जा रहे थे, लोग रंग-बिरंगे वस्त्रों में सजे थे, पर भीखा के मन में एक ही विचार था—यह संसार उनके पैरों में बेड़ियां डाल रहा है। रामनाम में उनकी प्रीति इतनी गहरी थी कि उन्होंने बिना किसी को बताए घर छोड़ दिया।

सद्गुरु की खोज और गुलाल साहब से मिलन

रामनाम के प्रति उनकी भक्ति उन्हें काशी की ओर ले गई, जहां उन्होंने कुछ समय तक वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया। पर उनकी आध्यात्मिक प्यास शांत नहीं हुई, क्योंकि उन्हें सच्चे गुरु की तलाश थी। मन ही मन वे प्रभु से प्रार्थना करते रहे कि उन्हें सद्गुरु मिल जाएं।

दैवयोग से, काशी से लौटते समय वे गाजीपुर के भुरकुड़ा गांव के पास अमुआरा गांव में रुके। वहां एक मंदिर में उन्होंने संत गुलाल साहब का एक भक्ति भरा पद सुना। उस गीत ने उनके हृदय को छू लिया। गुलाल साहब के शब्द उनके अंतर्मन में समा गए। वे तुरंत भुरकुड़ा की ओर चल पड़े, जहां गुलाल साहब सत्संग कर रहे थे। दोनों की आंखें मिलीं, और एक अलौकिक बंधन बन गया।

संत भीखा साहब का पावन जीवन

संतों का सान्निध्य आत्मा को शांति देता है, उनके शब्द हृदय को प्रभु के प्रेम से भर देते हैं, और उनकी एक झलक सांसारिक बंधनों को तोड़ देती है। संत भीखा साहब का जीवन ऐसी ही दिव्यता का प्रतीक है। रामनाम में डूबे हुए, उन्होंने न केवल स्वयं को परमात्मा से जोड़ा, बल्कि असंख्य लोगों को आध्यात्मिक पथ पर प्रेरित किया। उनका जीवन एक तपस्वी, भक्त और सिद्ध संत का उदाहरण है, जिनके शब्द आज भी भक्तों के हृदय में गूंजते हैं। यह लेख उनके पवित्र जीवन की गाथा को सरल और भक्ति-भाव से प्रस्तुत करता है।

प्रारंभिक जीवन और वैराग्य की ज्योत

संत भीखा साहब का जन्म विक्रम संवत् 1770 (लगभग 1713 ईस्वी) में उत्तर भारत के आजमगढ़ जनपद के मुहम्मदाबाद मंडल के खानपुर बोहाना गांव में एक चौबे ब्राह्मण परिवार में हुआ। बचपन से ही उनका स्वभाव सरल और सात्विक था। जहां अन्य बच्चे खेल-कूद में रमते थे, वहीं छोटे भीखा का मन साधु-संतों की संगति में रमता था। सात-आठ वर्ष की आयु में ही वे गांव में आने वाले संतों के पीछे चल पड़ते, उनके उपदेश सुनते और उनके साथ समय बिताते।

उनके हृदय में वैराग्य की भावना धीरे-धीरे गहरी होती गई। बारह वर्ष की आयु में उनका उपनयन संस्कार हुआ, और परिवार ने उन्हें गृहस्थ जीवन में बांधने का प्रयास किया। विवाह का प्रस्ताव रखा गया, पर भीखा मौन रहे। लोग समझे कि वे सहमत हैं, और तिलक के दिन घर में उत्सव की तैयारी शुरू हो गई। मंगल गीत गाए जा रहे थे, लोग रंग-बिरंगे वस्त्रों में सजे थे, पर भीखा के मन में एक ही विचार था—यह संसार उनके पैरों में बेड़ियां डाल रहा है। रामनाम में उनकी प्रीति इतनी गहरी थी कि उन्होंने बिना किसी को बताए घर छोड़ दिया।

सद्गुरु की खोज और गुलाल साहब से मिलन रामनाम के प्रति उनकी भक्ति उन्हें काशी की ओर ले गई, जहां उन्होंने कुछ समय तक वेद-शास्त्रों का अध्ययन किया। पर उनकी आध्यात्मिक प्यास शांत नहीं हुई, क्योंकि उन्हें सच्चे गुरु की तलाश थी। मन ही मन वे प्रभु से प्रार्थना करते रहे कि उन्हें सद्गुरु मिल जाएं।

दैवयोग से, काशी से लौटते समय वे गाजीपुर के भुरकुड़ा गांव के पास अमुआरा गांव में रुके। वहां एक मंदिर में उन्होंने संत गुलाल साहब का एक भक्ति भरा पद सुना। उस गीत ने उनके हृदय को छू लिया। गुलाल साहब के शब्द उनके अंतर्मन में समा गए। वे तुरंत भुरकुड़ा की ओर चल पड़े, जहां गुलाल साहब सत्संग कर रहे थे। दोनों की आंखें मिलीं, और एक अलौकिक बंधन बन गया। भीखा ने भाव-विभोर होकर प्रार्थना की:

मोहि राखो जी अपनी शरण।
अपरम्पार पार नहीं तेरो, कहौ का करन।
मन क्रम वचन आस इक तेरी, होउ जनम या मरन।
अविरल भक्ति के कारण तुम पर, हूँ ब्राह्मण देउ घरन।

जन 'भीखा' अभिलाष इही, नहीं चाहूँ मुक्ति गति तरन।

गुलाल साहब ने उन्हें मंत्र देकर शिष्य बना लिया। इस प्रकार भीखानंद, संत भीखा साहब के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे भुरकुड़ा में अपने गुरु के सान्निध्य में साधना करने लगे। धीरे-धीरे उनकी ख्याति फैलने लगी। गुलाल साहब के देहांत के बाद वे उनके उत्तराधिकारी बने।

रामनाम की साधना और आध्यात्मिक क्रांति

संत भीखा साहब का जीवन रामनाम की उपासना का जीवंत उदाहरण था। उस युग में, जब दिल्ली में मुगल



श। स. न. कमजोर हो रहा था और राजनैतिक अस्थिरता बढ़ रही थी, लोग निराशा के अंधकार में डूबे थे। साहित्य में रीतिकाल और श्रृंगार रस का बोलबाला था, पर संत आंदोलन ही आध्यात्मिक जागृति का सच्चा स्रोत था। संत भीखा साहब, गुलाल साहब, जगजीवन साहब जैसे संतों ने रामनाम के प्रकाश से लोगों के जीवन को उज्ज्वल किया। संत भीखा साहब ने सत्संग के माध्यम से लोगों को प्रभु भक्ति का मार्ग दिखाया। उनकी साधना का केंद्र रामनाम था। उनकी चेतना दिन-प्रतिदिन अंतर्मुखी होती गई। सिद्धियां उनके चरणों की दासी बन गईं, पर वे सिद्धियों से दूर रहे। वे केवल परमात्मा के भजन को ही सर्वस्व मानते थे।

सिद्धियों पर भक्ति की विजय

संत भीखा साहब की सिद्धि और भक्ति की महिमा कई घटनाओं में प्रकट हुई। एक बार एक साधु उनके आश्रम में आया और उसने मथुरा के पेड़ और त्रिवेणी का जल मांगा। संत भीखा साहब ने मौन धारण किया। साधु ने चमत्कार दिखाते हुए उपस्थित लोगों को पेड़ और जल प्रदान किया, पर जब संत ने अपने लिए मांगा, तो साधु की सिद्धि विफल हो गई। लज्जित होकर उसने संत के चरणों में क्षमा मांगी।

इसी तरह, प्रसिद्ध औघड़ संत कीनाराम ने भीखा साहब से मदिरा मांगी। संत ने मना किया। कीनाराम ने पानी को मदिरा में बदल दिया, पर जब संत ने उसे पीना

चाहा, तो वह स्वच्छ जल ही रहा। सिद्धियों ने उनके सामने हार मान ली। संत भीखा साहब कहते थे कि सच्ची सिद्धि तो प्रभु का भजन है।

भक्ति का दर्शन और शिक्षाएं

संत भीखा साहब का दर्शन सरल और गहन था। उन्होंने आत्म-राम की उपासना को सर्वोच्च धर्म बताया। उनके अनुसार, परमात्मा हर हृदय में बस्ता है। उनकी शिक्षाएं भक्तों को सांसारिक सुख-दुख से ऊपर उठने की प्रेरणा देती थीं। उन्होंने कहा:

भीखा सबते छोट होइ, रहै चरन लवलीन।

रामरूप को सो लखै, जो जन परम प्रबीन।

उनका विश्वास था कि रामनाम का जप ही सच्चा धन है। उनकी एक और प्रसिद्ध उक्ति है:

राम भजै सो धन्य, धन्य वपु मंगलकारी।

रामचरन अनुराग परम पद को अधिकारी।

उनकी रचनाएं सरल और रसपूर्ण भाषा में जीव, जगत, ब्रह्म और परमात्मा के स्वरूप को व्यक्त करती हैं। उनकी भक्ति दास्य भाव से परिपूर्ण थी, जिसमें वे स्वयं को प्रभु का दास मानते थे।

प्रमुख रचनाएं और शिष्य परंपरा

संत भीखा साहब की रचनाएं, जैसे राम जहाज, राम राग और राम संवाद, भक्ति और ज्ञान का अनमोल खजाना हैं। ये रचनाएं भक्तों को प्रभु के प्रति समर्पण और वैराग्य का मार्ग दिखाती हैं। उनके प्रमुख शिष्य संत गोविंद साहब थे, जिन्होंने उनकी शिक्षाओं को आगे बढ़ाया। उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में उनके अनुयायियों की संख्या आज भी बहुत अधिक है।

भुरकुड़ा: एक तीर्थ स्थल

संत भीखा साहब की कृपा से भुरकुड़ा एक आध्यात्मिक तीर्थ बन गया। उनके सत्संग में बड़े-बड़े संत और भक्त शामिल होते थे। उनकी उपस्थिति में लोग परम शांति और प्रेम का अनुभव करते थे। आज भी भुरकुड़ा में उनकी स्मृति में विजयादशमी के दिन एक विशाल उत्सव मनाया जाता है, जहां भक्त उनके भजनों और शिक्षाओं को याद करते हैं।

नश्वर देह का त्याग और अमर विरासत

विक्रम संवत् 1820 (लगभग 1763 ईस्वी) में संत भीखा साहब ने देह त्याग दी। पर उनकी आध्यात्मिक विरासत आज भी जीवित है। उनके भजन और उपदेश भक्तों को प्रभु भक्ति की ओर प्रेरित करते हैं। वे एक सिद्ध संत और आत्मज्ञानी थे, जिनका जीवन सादगी, भक्ति और प्रभु के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक था।

संत भीखा साहब का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची सिद्धि प्रभु के नाम में है, और सच्चा सुख आत्म-राम की शरण में है। उनकी शिक्षाएं आज भी हमें प्रेरित करती हैं कि हम अपने हृदय में राम को बसाएं और संसार के मोह को त्याग दें।

मन की शक्ति से बीमारी पर जीत

लुईस हे की आत्मिक चिकित्सा की दुनिया

लुईस हे (1926-2017) एक अमेरिकी लेखिका और प्रेरणादायक वक्ता थीं, जिन्होंने सेल्फ-हेल्प मूवमेंट की नींव रखी। उन्हें दुनियाभर में इसलिए जाना जाता है कि उन्होंने यह सिखाया कि हमारे विचार और भावनाएं हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर कैसे गहरा प्रभाव डालते हैं। उनका मानना था कि हर इंसान के पास अपने शरीर को मन के विचारों द्वारा ठीक करने की प्राकृतिक शक्ति मौजूद है।

लुईस हे का मुख्य सिद्धांत यह था कि हर बीमारी पहले मन में पैदा होती है, फिर शरीर में दिखती है। उनके अनुसार हर शारीरिक बीमारी का एक मानसिक या भावनात्मक कारण होता है। नकारात्मक विचार, पुराने दुख-दर्द, गुस्सा, और अपराध-बोध जैसी भावनाएं शरीर में बीमारी का रूप ले लेती हैं। उनका प्रसिद्ध कथन था कि हमारे सेल्स हमारे हर विचार को महसूस करते हैं और उसी के अनुसार प्रतिक्रिया देते हैं।

उन्होंने एक सरल हीलिंग फॉर्मूला बनाया जिसमें चार मुख्य चरण थे। पहला चरण था बीमारी की जिम्मेदारी को स्वीकार करना और यह समझना कि हमारे अपने विचारों ने इसे बनाया है। दूसरा चरण था पुराने दुख, गुस्से, डर और अपराध-बोध को छोड़ना। तीसरे चरण में रोजाना सकारात्मक एफमेंशन करना था, यानी अपने आप से पॉजिटिव बातें कहना। उनके सबसे प्रसिद्ध एफमेंशन में “मैं अपने आप से प्यार करता हूँ” सबसे महत्वपूर्ण था। इसके अलावा “मेरा शरीर स्वस्थ और मजबूत है”, “मैं पुराने दुख को छोड़ता हूँ”, और “मैं शांति और खुशी से भरा हूँ” जैसे एफमेंशन भी बहुत लोकप्रिय थे। चौथा और सबसे महत्वपूर्ण चरण था आत्म-प्रेम सीखना और खुद को पूरी तरह से स्वीकार करना।

अद्भुत कहानी – कैंसर से मुक्ति

लुईस हे की सबसे प्रसिद्ध और प्रेरणादायक कहानी उनके अपने कैंसर से ठीक होने की है। 1970 के दशक में जब उन्हें योनि का कैंसर हुआ, तो उन्होंने डॉक्टरों की सलाह के बावजूद कीमोथेरेपी या रेडिएशन का इलाज नहीं कराया। इसके बजाय उन्होंने अपनी ही बनाई हुई तकनीक का इस्तेमाल किया। उन्होंने अपने खान-पान को पूरी तरह बदला, सिर्फ पोषणकारी और प्राकृतिक भोजन लिया, रोजाना मेडिटेशन और एफमेंशन किया, और अपने बचपन के दुखद अनुभवों को छोड़ने पर काम किया।

सिर्फ छह महीने बाद जब उन्होंने दोबारा जांच कराई, तो डॉक्टरों को यह देखकर हैरानी हुई कि उनका कैंसर पूरी तरह गायब हो गया था। यह घटना उनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण बनी और दुनियाभर के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। उन्होंने यह साबित कर दिया था कि मन की शक्ति से शरीर की सबसे गंभीर बीमारी भी ठीक हो सकती है।

प्रभावशाली किताबें और सिखावन

लुईस हे ने 1976 में अपनी पहली किताब “हील योर बॉडी” प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने हर तरह की बीमारी के मानसिक कारण बताए और हर बीमारी के लिए विशेष एफमेंशन दिए। यह किताब इतनी लोकप्रिय हुई कि इसकी लाखों कॉपियां बिकीं और लोग इसे अपनी हीलिंग गाइड की तरह इस्तेमाल करने लगे। 1984 में उनकी सबसे प्रसिद्ध किताब “यू कैन हील योर लाइफ” प्रकाशित हुई, जो न्यूयॉर्क टाइम्स की बेस्टसेलर बनी और आज तक 50 मिलियन से ज्यादा कॉपियां बिक चुकी हैं। इस किताब का 35 से ज्यादा भाषाओं में अनुवाद हुआ है और यह दुनिया की सबसे प्रभावशाली सेल्फ-हेल्प किताबों में से एक मानी जाती है।

बीमारियों के मानसिक कारण – लुईस हे के नज़रिए से

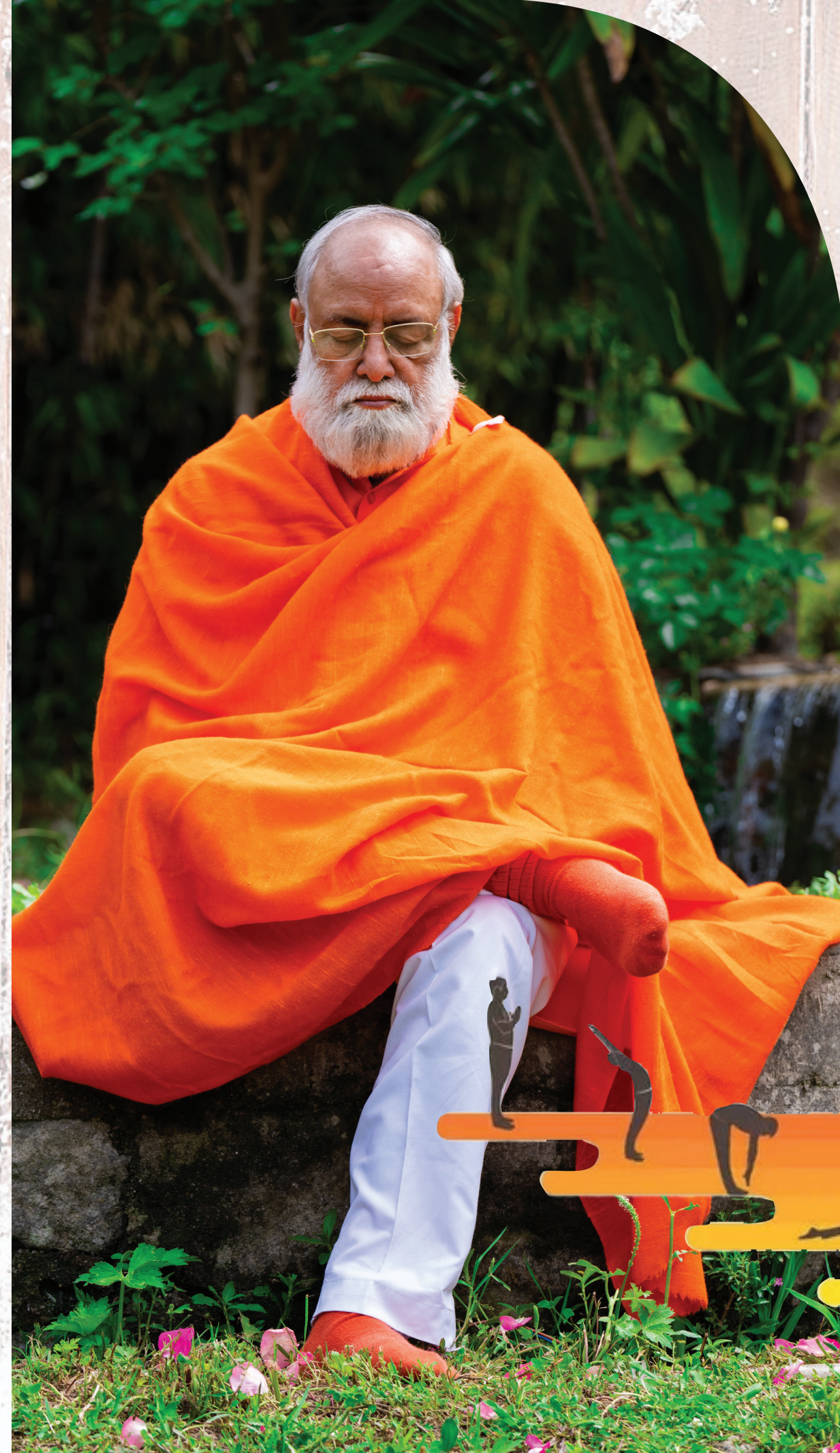
लुईस हे के अनुसार कैंसर का मुख्य कारण गहरा दुख और लंबे समय तक मन में रखी गई नाराजगी है। जब कोई व्यक्ति अपने पुराने बुरे अनुभवों को छोड़ने में असमर्थ होता है और उन्हें मन में दबाकर रखता है, तो वे कैंसर का रूप ले लेते हैं। हृदय रोग उनके अनुसार प्यार की कमी और भावनात्मक



सख्ती से होता है, जब व्यक्ति अपने दिल को दूसरों के लिए नहीं खोल पाता। मधुमेह के बारे में उनका मानना था कि यह तब होता है जब व्यक्ति जीवन की मिठास को स्वीकार नहीं कर पाता और हमेशा अतीत के दुख में फंसा रहता है। गठिया के रोग को वे आत्म-आलोचना और दूसरों पर गुस्से से जोड़ती थीं। उनका कहना था कि जब व्यक्ति खुद के साथ बहुत सख्त होता है और दूसरों को माफ नहीं कर पाता, तो यह जोड़ों में दर्द और अकड़न का कारण बनता है।

कितने लोगों को मिला फायदा ?

उन्होंने दुनियाभर में हजारों वर्कशॉप और सेमिनार किए, जिनमें लाखों लोगों ने भाग लिया और उनकी तकनीकों को सीखा। उनके पास हजारों टेस्टिमोनियल और सकारात्मक अनुभव आए हैं जिनमें लोगों ने बताया है कि कैसे उनकी तकनीकों से उनकी बीमारियां ठीक हुईं। कई लोगों ने कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग, अवसाद, और अन्य गंभीर बीमारियों से राहत पाने की बात कही है।



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर भगवान श्री लक्ष्मीनारायण धाम द्वारा योग विशेष समागम का भव्य आयोजन

जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी ने कराया शास्त्रोक्त अवधान योग; हजारों श्रद्धालुओं ने किया अनुभव साझा

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के पावन अवसर पर राजधानी दिल्ली के रोहिणी क्षेत्र में विश्वविख्यात सामाजिक-आध्यात्मिक संस्था भगवान श्री लक्ष्मीनारायण धाम द्वारा एक दिवसीय “योग विशेष समागम” का भव्य आयोजन किया गया। इस दिव्य समागम का मुख्य उद्देश्य योग के गुरु रहस्यों को जनसामान्य तक पहुँचाना तथा आत्मिक जागृति के माध्यम से मानव जीवन को शांतिपूर्ण, स्वस्थ और सार्थक बनाना रहा।

इस विशेष अवसर पर परम पूज्य अनंत श्री विभूषित जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी ने वैदिक शास्त्रों में वर्णित भगवान शिव प्रदत्त ‘अवधान योग’ की अद्वितीय विधि का सजीव अभ्यास करवाया। यह योग पद्धति सामान्य योगासनों से भिन्न है और आत्मा के गुरु रहस्यों को जानने तथा अनुभव करने में सहायक है।

समागम में दिल्ली-एनसीआर ही नहीं, बल्कि भारत के अनेक राज्यों से आए हजारों श्रद्धालु उपस्थित रहे। उपस्थित संगत ने अवधान योग के अभ्यास के उपरांत हाथ उठाकर तथा मंच पर आकर अपने-अपने दिव्य अनुभव साझा किए और बताया कि उन्हें तत्क्षण मानसिक शांति, ऊर्जा

एवं आत्मिक संतुलन की अनुभूति हुई। समागम के अतिथि के रूप में दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री विजेंद्र गुप्ता जी उपस्थित रहे। वहीं कार्यक्रम में पूर्व विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखो जी, दिल्ली नगर निगम के उप महापौर श्री जय भगवान यादव जी, विधायक श्री पवन शर्मा जी, नगर निगम पार्षद श्रीमती स्मिता कौशिक जी, श्रीमती मीनू गोयल जी, भाजपा महिला मोर्चा की महामंत्री श्रीमती कविता जी, एवं भाजपा जिलाध्यक्ष श्री गोयल जी सहित अनेक गणमान्य जनप्रतिनिधियों ने अपनी गरिमामयी



वजाइना में जलन, खुजली और व्हाइट डिस्चार्ज: एक प्राकृतिक समाधान

महिलाओं में वजाइना से जुड़ी समस्याएं जैसे – जलन, खुजली, व्हाइट डिस्चार्ज, यूटीआई (यूटीआई संक्रमण) – आज आम होती जा रही हैं। इन लक्षणों के पीछे कई कारण हो सकते हैं जैसे हार्मोनल बदलाव, संक्रमण, या जीवनशैली संबंधी समस्याएं। इस विषय पर कुछ डॉक्टरों और उपयोगकर्ताओं ने ‘मिरेकल वंडर वाश’ के अनुभव साझा किए हैं, जिसे आध्यात्मिक गुरु जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी द्वारा सुझाया गया एक प्राकृतिक समाधान बताया गया है।

डॉ. विजेता नेहरा (एमबीबीएस, मेडिकल ऑफिसर – गंगूवाल व कोटला) कहती हैं:

“मेरे क्लिनिकल अनुभव में मैंने पाया है कि महिलाएं अक्सर वजाइना से जुड़ी समस्याओं से परेशान रहती हैं। मैंने स्वास्थ्य शिविरों में यह देखा कि कुछ महिलाओं को ‘मिरेकल वंडर वाश’ के प्रयोग से कुछ ही सेंकंडों में यूटीआई से राहत मिली। नियमित उपयोग से न केवल संक्रमण दूर हुआ बल्कि सर्वाइकल समस्याएं, पीआईओ, डिप्रेशन जैसे लक्षणों में भी सुधार देखा गया।”

डॉ. नवनीत भारद्वाज (एमबीबीएस, मेडिकल ऑफिसर – आनंदपुर साहिब) का अनुभव

“मैं कई समागमों में चिकित्सक के रूप में गया और वहाँ अनेक महिलाओं से सुना कि मिरेकल वंडर वाश के इस्तेमाल से उन्हें यूटीआई, ल्यूकोरिया, पीसीओडी, और फंगल संक्रमण जैसी समस्याओं से राहत मिली। मैंने अपने महिला स्टाफ को भी इसे उपयोग के लिए दिया और 7 दिन में ही उनके लंबे समय से चले आ रहे संक्रमण दूर हो गए। यह उन लोगों के लिए आशा की किरण है, जिन्हें सामान्य दवाओं से आराम नहीं मिल रहा था।”

डॉ. शोफाली यादव (एमबीबीएस, ICCM), गुरुग्राम:

“प्रेग्नेंसी के दौरान मुझे वजाइनल डिस्चार्ज और दुर्गंध की समस्या थी। मेरी गायनोकोलॉजिस्ट ने मुझे एंटी-फंगल दवाएं लेने को कहा, लेकिन मैंने मिरेकल वंडर वाश का प्रयोग किया और कुछ ही दिनों में आराम महसूस हुआ। डिलीवरी के बाद हुए सर्जिकल इंफेक्शन से भी मुझे इसी के माध्यम से राहत मिली।”

डॉ. सुनीता सिंह (MDS, ओरल एंड मैक्सिलोफेशियल

सर्जरी):

“मुझे लंबे समय से गुप्तांग में जलन और खुजली की शिकायत रहती थी। गुरुदेव जी की कृपा से मैंने मिरेकल वंडर वाश का प्रयोग किया और मेरी समस्या दूर हो गई। मेरी शुभकामनाएं हैं कि सभी साथ संगत पर मां दुर्गा की कृपा बनी रहे।”



International
Yoga Day



@ मोहित कुमार

दो देशों के बीच टकराव का एक और दौर और उसके बाद एक बार फिर सीज़फायर का ऐलान। लेकिन इस बार यह ऐलान न तो ईरान ने किया और न ही इजरायल ने बल्कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने किया है। डोनाल्ड ट्रंप ने जो बयान इस बार ईरान और इजरायल को लेकर जारी किया, वही बयान उन्होंने पहले ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत-पाकिस्तान को लेकर भी दिया था। दावा फिर वही है कि दोनों देश सीज़फायर के लिए राजी हो गए हैं।

ईरान-इजरायल संघर्ष की शुरुआत और अमेरिकी हस्तक्षेप

ईरान और इजरायल के बीच यह विवाद 12 जून 2025 को शुरू हुआ और अब तक इसमें कई अहम पड़ाव आ चुके हैं। इस दौरान अमेरिका की भी इसमें सक्रिय भूमिका देखने को मिली, साथ ही मिडिल ईस्ट का देश क़तर भी इसमें अप्रत्याशित रूप से शामिल हो गया। 24 जून की सुबह अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक वीडियो संदेश में ऐलान किया कि अमेरिका ने ईरान की न्यूक्लियर साइट्स फोर्दो, नतान्ज़ और इस्फ़हान पर सफलतापूर्वक हमले किए हैं। ये हमले B-2 स्टेल्थ बॉम्बर्स के ज़रिए किए गए।

ईरान ने कहा कि अमेरिका के क़तर बेस पर हमला

अमेरिकी हमले के जवाब में ईरान ने 23 जून को क़तर में स्थित अल-उदीद एयरबेस पर मिसाइल हमले किए। यह एयरबेस क़तर की राजधानी दोहा के पास स्थित है और अमेरिका का मिडिल ईस्ट में सबसे बड़ा मिलिट्री



बेस है, जहाँ करीब 10,000 अमेरिकी सैनिक तैनात हैं। ईरान ने दावा किया कि उसने 6 बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। ट्रंप ने कहा कि 14 मिसाइलें थीं, जबकि क़तर सरकार के अनुसार कुल 19 मिसाइलें दागी गई थीं जिन्हें सभी इंटरसेप्ट कर लिया गया। ईरान के अधिकारियों ने न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया कि हमले से पहले उन्होंने क़तर सरकार को इसकी सूचना दे दी थी।

क़तर ही क्यों ?

ईरान ने क़तर को इसलिए चुना क्योंकि अल-उदीद एयरबेस अमेरिका का रणनीतिक सैन्य अड्डा है। और ईरान की मिड-रेंज मिसाइलें क़तर तक आसानी से पहुंच सकती हैं। क़तर, ईरान का भौगोलिक रूप से सबसे निकटतम पड़ोसी है, किसी और देश के एयरस्पेस का उपयोग किए बिना वहां हमला किया जा सकता था। इतना ही नहीं क़तर

को अमेरिका का सबसे करीबी मिडिल ईस्ट सहयोगी माना जाता है। इस हमले के ज़रिए ईरान ने अमेरिका के साथ-साथ गल्फ देशों को भी सख्त संदेश दिया। खासतौर पर यूएई, सऊदी अरब और बहरीन जैसे देशों को।

भारतीय नागरिकों पर प्रभाव

क़तर में ईरान के हमले के बाद भारत सहित कई देशों की एंबेसी ने अपने नागरिकों के लिए एडवाइज़री जारी की। भारतीय एंबेसी ने कहा: "क़तर में रह रहे भारतीय नागरिक सतर्क रहें, घरों में रहें और स्थानीय प्रशासन के निर्देशों का पालन करें।" बाद में क़तर के गृह मंत्रालय ने हालात सामान्य होने की जानकारी दी।

क़तर में रहते हैं 7 लाख भारतीय

क़तर में इस समय लगभग 7 लाख भारतीय रहते हैं जो किसी भी विदेशी नागरिकता वाले समूह में सबसे अधिक हैं। ये लोग विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं जैसे प्रोफेशनल्स: मेडिसिन, इंजीनियरिंग, शिक्षा, बैंकिंग, मीडिया, फाइनेंस। श्रमिक वर्ग: कंस्ट्रक्शन, माइनिंग, ट्रांसपोर्टेशन आदि। क़तर में लगभग 20,000 से ज्यादा भारतीय कंपनियां (सीधे या जॉइंट वेंचर में) मौजूद हैं। 2017 से 2025 के बीच भारतीय कंपनियों ने क़तर में 350 मिलियन डॉलर का निवेश किया है।

2022 में क़तर में हुए FIFA World Cup के निर्माण कार्य के दौरान 6,500 से अधिक प्रवासी मजदूरों की मौत हुई थी, जिनमें बड़ी संख्या भारतीयों की थी।

ईरान ने क़तर में हमला कर केवल अमेरिका को नहीं, बल्कि गल्फ के सभी सहयोगी देशों को चेतावनी दी है। दूसरी ओर, क़तर में रह रहे लाखों भारतीयों की सुरक्षा और उनके भविष्य को लेकर भी कई सवाल खड़े हो रहे हैं।

ईरान-इज़राइल जंग: एक अंतर्मन की यात्रा

दुनिया के एक कोने में, जहाँ रेत और आसमान मिलते हैं, दो देश—ईरान और इज़राइल—आज एक ऐसी जंग में उलझे हैं, जो सिर्फ हथियारों और बमों की नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति, नैतिकता और इंसानियत की भी है। जून 2025 में शुरू हुई यह जंग, जिसमें इज़राइल ने ईरान के न्यूक्लियर ठिकानों पर हमला किया और ईरान ने मिसाइलों व ड्रोन्स से जवाब दिया, ने पूरी दुनिया को सोचने पर मजबूर कर दिया। आखिर गलती किसकी है? इस जंग का भविष्य क्या है? और सबसे जरूरी, क्या हम इससे कुछ सीख सकते हैं? यह लेख एक साधारण, भावनात्मक और दार्शनिक नज़रिए से इस जंग को समझने की कोशिश करता है, जिसमें डेटा और तथ्य दिल से दिल तक बात करते हैं।

जंग की आग: कैसे शुरू हुआ यह तूफ़ान ?

हर जंग की शुरुआत एक चिंगारी से होती है, और इस बार चिंगारी इज़राइल ने जलाई। जून 2025 में, इज़राइल ने ईरान के न्यूक्लियर साइट्स पर हमले शुरू किए, जिसमें तीन ईरानी जनरलों की मौत हुई और इस्फ़हान की साइट को निशाना बनाया गया। इज़राइल का कहना था कि ईरान का न्यूक्लियर प्रोग्राम उनके लिए “खतरे की घंटी” है। लेकिन क्या यह हमला जरूरी था? क्या बातचीत का रास्ता नहीं बचा था?

ईरान ने जवाब में मिसाइलें और ड्रोन्स दागे, जिनमें से एक ने इज़राइल के एक अस्पताल को निशाना बनाया, जिसमें 24 लोग मारे गए और 23 घायल हुए। यह दृश्य दिल दहला देने वाला था—एक अस्पताल, जहाँ लोग जिंदगी की उम्मीद में थे, वहाँ मौत ने दस्तक दी। दोनों देशों ने एक-दूसरे पर इल्जाम लगाए, लेकिन सच यह है कि इस जंग में कोई विजेता नहीं। ईरान की हवाई सुरक्षा कमजोर हो चुकी है, और इज़राइल की एयर फ़ोर्स ने आसमान पर कब्ज़ा कर लिया है। फिर भी, दोनों देशों के लोग डर और अनिश्चितता के साये में जी रहे हैं।

यह जंग सिर्फ हथियारों की नहीं, बल्कि विश्वास और डर की है। इज़राइल को डर है कि ईरान का न्यूक्लियर हथियार उनकी बर्बादी ला सकता है। दूसरी तरफ़, ईरान को लगता है कि इज़राइल और उसका दोस्त अमेरिका उसे मिटाने की साजिश रच रहे हैं। यह डर, यह अविश्वास, सदियों पुराना है। लेकिन क्या डर के नाम पर हमले और जवाबी हमले सही हैं? यह सवाल हर इंसान के मन में गूँजता है।

गलती किसकी? एक अनसुलझा सवाल

जब दो देश जंग में उलझते हैं, तो सबसे बड़ा सवाल यही होता है—गलती किसकी? इस जंग में दोनों पक्षों ने आग में घी डाला है। इज़राइल ने पहले हमला करके ईरान की न्यूक्लियर साइट्स को निशाना बनाया। उनके लिए यह “पहले मारो, बाद में सोचो” की रणनीति थी। लेकिन क्या बिना ठोस सबूत के, बिना UN की मंजूरी के, यह हमला सही था? इज़राइल का कहना है कि वह अपनी सुरक्षा के लिए ऐसा कर रहा है, लेकिन अस्पतालों और सिविलियन इलाकों पर हमले नैतिकता के सवाल उठाते हैं।

वहीं, ईरान का जवाब भी कम खतरनाक नहीं। क्लस्टर मुनिशन्स—जो कई देशों में बैन हैं—का इस्तेमाल करके ईरान ने इज़राइल के अस्पताल को निशाना बनाया। यह जवाबी कार्रवाई नहीं, बल्कि बदले की आग थी। ईरान की प्रॉक्सी ग्रुप्स, जैसे हमास और हूती,



ने भी इस जंग को और उलझाया है। लेकिन ईरान का इंटरनेट ब्लैकआउट, जिसे उन्होंने इज़राइल की जासूसी रोकने के लिए किया, ने उनके ही लोगों को तकलीफ़ में डाल दिया। यह एक तरह से “पानी काटने” जैसा था—नुकसान दुश्मन से ज्यादा अपने लोगों को हुआ।

सच तो यह है कि दोनों देश एक-दूसरे को शैतान मानते हैं। इज़राइल को लगता है कि ईरान उसे मिटा देगा; ईरान को लगता है कि इज़राइल उसकी आज़ादी छीन लेगा। इस अविश्वास की जड़ें इतिहास में गहरी हैं। लेकिन क्या गलती सिर्फ़ एक की है? या यह दोनों की सामूहिक नाकामी है, जो बातचीत की मेज़ को छोड़कर हथियार उठा रहे हैं? दर्शनशास्त्र हमें सिखाता है कि सत्य कभी एकतरफ़ा नहीं होता। शायद इस जंग में दोनों गलत हैं, और सही सिर्फ़ वो लोग हैं जो शांति की बात करते हैं।

ताकत का तराजू

जंग में ताकत का खेल बड़ा अहम होता है। अगर देखा जाए, तो इज़राइल इस समय ताकत में आगे है। उसकी एयर फ़ोर्स, मिसाइल डिफेंस और जासूसी क्षमता मिडिल ईस्ट में सबसे बेहतर है। इज़राइल ने सैकड़ों हवाई हमले किए, जिनमें उसे नुकसान कम हुआ। वह सीरिया को रिफ्यूजिंग बेस की तरह इस्तेमाल कर रहा है, जिससे उसकी रणनीति और मजबूत हो गई है। अमेरिका का समर्थन और कुछ अरब देशों का चुपके से साथ इज़राइल को और ताकत देता है।

लेकिन इज़राइल की कमजोरी भी है। लंबी जंग उसके लिए मुश्किल हो सकती है। पायलट थक रहे हैं, विमान रखरखाव माँगते हैं, और अगर अमेरिका ने साथ नहीं दिया, तो इज़राइल अकेला पड़ सकता है। दूसरी तरफ़, ईरान की हालत खराब है। उसकी हवाई सुरक्षा टूट चुकी है, मिसाइलों का ज़खीरा 90% कम हो गया है, और टॉप कमांडर्स मारे जा चुके हैं। फिर भी, ईरान के पास ड्रोन्स और प्रॉक्सी ग्रुप्स जैसे हथियार हैं, जो इज़राइल को परेशान कर सकते हैं।

ईरान की सबसे बड़ी ताकत उसकी ज़िद है। वह हार नहीं मानता, भले ही नुकसान कितना भी हो। लेकिन उसकी कमजोरी उसका अकेलापन है। चीन ने सिर्फ़ शांति की बात की, रूस अपनी उक्रेन जंग में उलझा है, और

हिज़बुल्लाह अभी चुप है। इस तराजू में इज़राइल का पलड़ा भारी है, लेकिन ईरान की ज़िद और छुपे हुए हथियार इस जंग को लंबा खींच सकते हैं। यह एक ऐसी शतरंज है, जहाँ दोनों खिलाड़ी चाल चल रहे हैं, लेकिन बोर्ड पर खून बिखर रहा है।

जंग का भविष्य: शांति या तबाही ?

इस जंग का भविष्य क्या होगा? यह सवाल हर उस इंसान के मन में है, जो इस ख़बर को पढ़ रहा है। कुछ संभावनाएँ हैं:

और जंग: अगर अमेरिका इज़राइल के साथ आया, तो यह जंग पूरे मिडिल ईस्ट को लपेट सकती है। ईरान ने चेतावनी दी है कि अमेरिका के आने से “नया गेम” शुरू होगा। हूती और हमास जैसे ग्रुप्स भी कूद सकते हैं।

ठहराव: अगर दोनों देश थक गए, तो जंग धीमी पड़ सकती है। इज़राइल के पास संसाधनों की कमी हो सकती है, और ईरान के पास मिसाइलें ख़त्म हो रही हैं।

बातचीत: यूरोप ने जेनेवा में बातचीत की कोशिश की, लेकिन ईरान ने कहा कि हमले के बीच वह न्यूक्लियर प्रोग्राम पर बात नहीं करेगा। फिर भी, अगर अमेरिका या UN दबाव डाले, तो शांति का रास्ता खुल सकता है।

ईरान में बग़ावत: इज़राइल शायद यह चाहता है कि ईरान में लोग अपने लीडर के खिलाफ़ उठ खड़े हों। लेकिन इतिहास बताता है कि ऐसा करने से अक्सर और अराजकता फैलती है, जैसे इराक़ में 2003 के बाद हुआ।

इस जंग का भविष्य कई चीज़ों पर टिका है। अमेरिका क्या करेगा? अगर वह इज़राइल के साथ आया, तो तबाही बढ़ सकती है। अगर न्यूक्लियर साइट्स जैसे बूशहर पर हमला हुआ, तो रेडियोएक्टिव रिसाव से लाखों लोग प्रभावित हो सकते हैं। दुनिया की अर्थव्यवस्था भी दौंव पर है, क्योंकि ईरान का तेल और स्ट्रेट ऑफ़ होर्मुज़ ग्लोबल मार्केट के लिए जरूरी है।

लेकिन सबसे बड़ा सवाल यह है—क्या हम इस जंग से कुछ सीखेंगे? दर्शनशास्त्र कहता है कि इंसान की सबसे बड़ी ताकत उसकी गलतियों से सीखने की क्षमता है। लेकिन हम बार-बार वही गलतियाँ दोहराते हैं। शायद इस जंग का भविष्य शांति हो, अगर दोनों देश अपने डर को काबू करें और बातचीत की मेज़ पर आएँ।

इंसानियत का सवाल

यह जंग सिर्फ़ दो देशों की नहीं, बल्कि इंसानियत की है। इज़राइल और ईरान, दोनों अपनी संस्कृति और इतिहास से बंधे हैं। इज़राइल के लिए, यह जंग जिंदगी और मौत का सवाल है—एक और नरसंहार से बचने की कोशिश। ईरान के लिए, यह आज़ादी और सम्मान की लड़ाई है, जिसमें वह पश्चिमी ताकतों को चुनौती दे रहा है। लेकिन इस सब में, आम इंसान कहाँ है?

ईरान में इंटरनेट बंद होने से लोग अंधेरे में हैं। इज़राइल में सेंसरशिप ने सच को छुपा दिया। दोनों तरफ़ लोग डर रहे हैं, मर रहे हैं, और अपने बच्चों के भविष्य के लिए चिंतित हैं। नैतिकता का सवाल यह है—क्या हथियारों से जीत सचमुच जीत है? क्लस्टर मुनिशन्स, न्यूक्लियर साइट्स पर हमले, और सिविलियन नुकसान—यह सब क्या साबित करता है? सिर्फ़ यह कि हम अपनी इंसानियत को भूल रहे हैं।

दार्शनिक नज़रिए से, यह जंग हमें एक शीशा दिखाती है। हमारी दुनिया, जो टेक्नोलॉजी और प्रोग्रेस की बात करती है, आज भी डर और नफ़रत में उलझी है। अगर हम इस जंग से नहीं सीखें, तो हमारा भविष्य भी अंधेरे में डूब सकता है। लेकिन अगर हम शांति की राह चुनें, तो शायद एक नई सुबह मुमकिन है।

एक उम्मीद की किरण

ईरान और इज़राइल की जंग हमें बहुत कुछ सिखाती है। यह सिखाती है कि डर और अविश्वास कितना खतरनाक हो सकता है। यह सिखाती है कि ताकत दिखाने से ज्यादा जरूरी है बातचीत। और सबसे जरूरी, यह सिखाती है कि इंसानियत को बचाने के लिए हमें अपने अंदर झाँकना होगा।

जून 2025 की यह जंग अभी चल रही है। इज़राइल की ताकत और ईरान की ज़िद इसे और लंबा खींच सकती हैं। लेकिन अगर हम सब—चाहे वह नेता हों, नागरिक हों, या दुनिया के बाकी लोग—शांति के लिए एक कदम उठाएँ, तो शायद यह आग ठंडी हो सकती है। आखिर, जंग का अंत सिर्फ़ हथियारों से नहीं, बल्कि दिलों के मिलने से होता है। क्या हम उस दिन का इंतज़ार करेंगे, या उसे बनाने की कोशिश करेंगे?

इंसानियत का मॉडल या राजनीतिक प्रयोगशाला ?

केरल, वो धरती जहां हरे-भरे जंगल, शांत बैकवॉटर्स और मुस्कुराते लोग दिल को छू लेते हैं। ये सिर्फ एक राज्य नहीं, एक दर्शन है— एक ऐसा मॉडल जो दुनिया को दिखाता है कि इंसानियत और तरक्की साथ-साथ चल सकते हैं। लेकिन क्या ये मॉडल सचमुच इतना परफेक्ट है ? क्या इसके पीछे की कहानी उतनी ही खूबसूरत है जितनी बाहर से दिखती है ?

केरल मॉडल: इंसानियत का आईना ?

केरल मॉडल—ये नाम सुनते ही दिमाग में आता है एक ऐसा राज्य जहां लोग पढ़े-लिखे हैं, हेल्थकेयर टॉप क्लास है, और गरीबी कम। डेटा भी यही कहता है। केरल का HDI (ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स) भारत में सबसे ऊंचा है। मातृ मृत्यु दर (MMR) सिर्फ 30.2 है, जबकि पूरे भारत का 113। शिशु मृत्यु दर (IMR) 4.4, भारत के 35.1 के मुकाबले। और अंडर-5 मृत्यु दर (U5MR) 5.2, जबकि भारत का 41.9। ये नंबर सिर्फ आंकड़े नहीं, इनके पीछे लाखों जिंदगियों की कहानियां हैं।

केरल NITI Aayog के पाँवटी इंडेक्स, SDG इंडेक्स, हेल्थ इंडेक्स और एजुकेशन परफॉर्मेंस में नंबर वन है। आयुष्मान भारत में सबसे ज्यादा फ्री ट्रीटमेंट्स यहीं मिलते हैं। ये सब इसलिए क्योंकि केरल ने इंसान को पहले रखा, न कि जाति, धर्म या पैसे को। लेकिन क्या ये सब इतना आसान था ? नहीं। केरल ने ये मॉडल दशकों की मेहनत, सोशल वेलफेयर और लेफ्ट की विचारधारा से बनाया।

फिर भी, कुछ लोग कहते हैं कि ये मॉडल सिर्फ दिखावा है। BJP के नेता राजीव चंद्रशेखर का कहना है कि केरल मॉडल CPI(M) और कांग्रेस की “करणान और फाइनैशियल इंटररेस्ट्स” को बचाने का जरिया है। क्या ये सच है ? या ये सिर्फ पॉलिटिकल गेम है ? सच शायद बीच में कहीं है। केरल का मॉडल इंसानियत का आईना है, लेकिन इस आईने में कुछ धब्बे भी हैं। और ये धब्बे हमें सोचने पर मजबूर करते हैं—क्या परफेक्शन सिर्फ एक इल्यूजन है ?

लेफ्ट का किला: सपने और सवाल

केरल वो इकलौता राज्य है जहां लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (LDF) की सरकार है। 2016 से पिनराई विजयन CM हैं, और 2021 में फिर जीते। ये अपने आप में बड़ी बात है, क्योंकि भारत में लेफ्ट की पॉलिटिक्स अब कमजोर हो रही है। लेकिन केरल में क्यों ? क्योंकि यहां के लोग LDF के “नव केरलम” विजन पर भरोसा करते हैं—एक ऐसा केरल जो इकोनॉमिक ग्रोथ, सोशल जस्टिस और सस्टेनेबिलिटी को बैलेंस करे।

LDF ने कई बड़े काम किए। 6,400 स्टार्टअप्स, 63,000 जॉब्स, और 2026 तक 15,000 स्टार्टअप्स का टारगेट। टेक्नोलॉजी में भी केरल आगे है—डिजिटल यूनिवर्सिटी, डिजिटल साइंस पार्क, ग्राफीन इनोवेशन सेंटर और K-FON प्रोजेक्ट, जो हर घर तक ब्रॉडबैंड पहुंचाएगा। टेक्नोपार्क, इन्फोपार्क और साइबरपार्क में 1.5 लाख लोग जॉब्स कर रहे हैं। ये सब सुनकर लगता है कि



केरल सचमुच फ्यूचर में जी रहा है।

लेकिन हर सिक्के का दूसरा पहलू होता है। LDF पर इल्जाम लगते हैं कि वो कम्युनल टेंशन्स को भड़काता है। नीलंबूर बायपोल में UDF ने कहा कि LDF ने हिंदू वोटर्स को लुभाने के लिए इस्लामोफोबिया फैलाया। दूसरी तरफ, CPI(M) ने UDF पर जम्मात-ए-इस्लामी से डील करने का इल्जाम लगाया। गवर्नर अरलेकर ने कहा कि यूनिवर्सिटीज में पॉलिटिक्स की वजह से पढ़ाई बर्बाद हो रही है। SFI (CPI(M) का स्टूडेंट विंग) की कैंपस पॉलिटिक्स भी सवाल में हैं।

तो सवाल ये है—क्या LDF का विजन सचमुच इंकलूसिव है ? या ये सिर्फ पावर गेम का हिस्सा है ? केरल का लेफ्ट एक सपना बुन रहा है, लेकिन क्या ये सपना सबके लिए है ? या सिर्फ कुछ लोगों के लिए ?

इकोनॉमी और जॉब्स: उड़ान और ठोकड़ें

केरल की इकोनॉमी एक मिक्स्ट बैग है। एक तरफ स्टार्टअप्स और टेक्नोलॉजी का बूम, दूसरी तरफ फिस्कल क्राइसिस और बेरोजगारी। 2025-26 में स्टेट का इंटरनल रेवेन्यू 1 लाख करोड़ के पार जाएगा। 6,500 स्टार्टअप्स, 530 इनोवेशन सेंटर्स और \$10 मिलियन का इनवेस्टमेंट। ये सब बताता है कि केरल न्यू इंडिया का हिस्सा बन रहा है।

लेकिन चैलेंजेस भी कम नहीं। सेंट्रल गवर्नमेंट की पॉलिसीज की वजह से केरल को हर साल 50,000 करोड़ का लॉस होता है। IGST सेटलमेंट में 956.16 करोड़ का नुकसान। एग्रीकल्चर में क्राइसिस है—जंगली जानवरों के अटैक्स और ह्यूमन-वाइल्डलाइफ कॉन्फ्लिक्ट्स की वजह से। नीलंबूर में लोग कहते हैं कि

LIFE मिशन (हाउसिंग) और NH-66 (इन्फ्रास्ट्रक्चर) में डेवलपमेंट रुका हुआ है।

बेरोजगारी भी बड़ा इश्यू है। पढ़े-लिखे यूथ को जॉब्स नहीं मिलते, इसलिए वो विदेश चले जाते हैं। IT सेक्टर में 1.5 लाख जॉब्स हैं, लेकिन ट्रेडिशनल सेक्टर्स जैसे एग्रीकल्चर में जॉब्स कम हो रहे हैं। तो क्या केरल की इकोनॉमी सिर्फ कुछ लोगों के लिए उड़ान भर रही है ? या ये सबके लिए है ? ये सवाल हर केरलवासी के दिल में है।

हेल्थ, एजुकेशन और फ्रीडम: केरल की आत्मा

केरल की हेल्थ और एजुकेशन सिस्टम उसकी आत्मा हैं। हेल्थ में केरल नंबर वन है—MMR, IMR, U5MR सब बाकी भारत से बेहतर। इंस्टिट्यूशनल डिलीवरीज 99.8% हैं। आयुष्मान भारत में सबसे ज्यादा फ्री ट्रीटमेंट्स। इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड वायरोलॉजी जैसे इनोवेशन्स। ये सब बताता है कि केरल में हर जिंदगी की कीमत है।

एजुकेशन में भी केरल टॉप पर है। लिटरेसी रेट सबसे हाई। 530 इनोवेशन सेंटर्स स्टूडेंट्स को एंटरप्रेन्योर बनने का मौका दे रहे हैं। लेकिन प्रॉब्लम्स भी हैं। यूनिवर्सिटीज में पॉलिटिक्स की वजह से पढ़ाई पर असर पड़ता है। SFI की कैंपस पॉलिटिक्स पर सवाल उठते हैं। KSHEC ने इंडियन नॉलेज सिस्टम्स पर टेक्स्टबुक लॉन्च की, लेकिन लेफ्ट टीचर्स ने इसका ऑपोज किया।

धार्मिक स्वतंत्रता में केरल का रिकॉर्ड अच्छा है। हेल्थ डेटा दिखाता है कि यहां कोई भेदभाव नहीं। लेकिन पॉलिटिक्स में कम्युनल टेंशन्स बढ़ रहे हैं। नीलंबूर में LDF और UDF ने एक-दूसरे पर कम्युनल पॉलिटिक्स

के इल्जाम लगाए। वक्फ अमेंडमेंट एक्ट 2025 ने मुस्लिम लीडर्स को नाराज किया। 2022 में पथानमथिट्टा में रिचुअल ह्यूमन सैक्रिफाइस का केस भी शॉकिंग था।

तो क्या केरल की आत्मा सचमुच इतनी प्योर है ? या ये भी पॉलिटिक्स की चपेट में आ रही है ? ये सवाल हमें अपने अंदर झांकने पर मजबूर करता है।

केरल के लोग: प्यार, संस्कृति और सच

केरल के लोग—ये वो जादू हैं जो इस राज्य को स्पेशल बनाते हैं। एक फॉरेन ट्रैवलर, अनाइस, ने कहा कि केरल के लोग “फ्रेंडली और वेलकमिंग” हैं। यहां का खाना, बैकवॉटर्स, आयुर्वेद—सब कुछ दिल को छूता है। केरल की कल्चर में परफॉर्मिंग आर्ट्स, ओरल नैरेटिव्स और ट्रेडिशन हैं, जो अब एजुकेशन में भी शामिल हो रहे हैं।

केरल के लोग प्रोग्रेसिव हैं। स्टार्टअप्स में रूरल इनक्लूजन, सस्टेनेबिलिटी पर फोकस—ये सब उनकी मॉडर्न थिंकिंग दिखाता है। सोशल मीडिया पर फार्मर्स टेक्निकल एडवाइस लेते हैं। ये ट्रेडिशन और मॉडर्निटी का मिक्स है।

लेकिन चैलेंजेस भी हैं। नीलंबूर में पॉलिटिकल पोलराइजेशन दिखा। करप्शन के इल्जाम लगते हैं, हालांकि LDF इसे ट्रांसपेरेंसी से काउंटर करता है। एक इलेक्ट्रोक्व्यूशन डेथ पर कांग्रेस और LDF ने एक-दूसरे को ब्लेम किया।

तो केरल के लोग क्या हैं ? वो प्यार, इंकलूसिवनेस और कल्चर का मिक्स हैं। लेकिन पॉलिटिक्स और करप्शन के इल्जाम उनकी इमेज को चैलेंज करते हैं। शायद सच यही है—केरल के लोग परफेक्ट नहीं, लेकिन वो इंसान हैं, जो हर दिन बेहतर होने की कोशिश करते हैं।

केरल का दर्शन

केरल सिर्फ एक राज्य नहीं, एक आइडिया है। ये वो आइडिया है जो कहता है कि इंसानियत, एजुकेशन और हेल्थ पैसे से ज्यादा इंपॉर्टेंट हैं। लेकिन ये आइडिया हकीकत से टकराता है—पॉलिटिक्स, करप्शन, बेरोजगारी और कम्युनल टेंशन्स से। केरल का मॉडल हमें सिखाता है कि तरक्की आसान नहीं, लेकिन नामुमकिन भी नहीं।

केरल के लोग, उनकी संस्कृति, उनका प्यार—ये सब हमें याद दिलाता है कि जिंदगी डेटा से ज्यादा है। ये इमोशन्स, सपनों और स्ट्रगल्स की कहानी है। तो आइए, केरल से सीखें, लेकिन ये भी पूछें—क्या हम अपने सपनों को हकीकत बना सकते हैं ? या वो सिर्फ सपने ही रह जाएंगे ? ये सवाल सिर्फ केरल का नहीं, हम सबका है।

समझदारों की दुनिया में माँएँ मूर्ख होती हैं

मेरा भाई और कभी-कभी मेरी बहनें भी
बड़ी सरलता से कह देते हैं

मेरी माँ को मूर्ख और
अपनी समझदारी पर इतराने लगते हैं

वे कहते हैं नहीं है ज़रा-सी भी
समझदारी हमारी माँ को

किसी को भी बिना जाने दे देती है
अपनी बेहद प्रिय चीज़

कभी शॉल, कभी साड़ी और कभी-कभी
रुपए-पैसे भी

देते हुए भूल जाती है वह कि
कितने जतन से जुटाया था उसने यह सब

और पल भर में देकर हो गई
फिर से खाली हाथ

अभी पिछले ही दिनों माँ ने दे दी
भाई की एक बढ़िया कमीज़

किसी राह चलते भिखारी को
जो घूम रहा है उसी तरह निर्वस्त्र

भरे बाज़ार में
बहनें बिसूरती हैं कि

पिता के जाने के बाद जिस साड़ी को
माँ उनकी दी हुई अंतिम भेंट मान

सहेजे रही इतने बरसों तक
वह साड़ी भी दे दी माँ ने

सुबह-शाम आकर घर बुहारने वाली को
माँ सच में मूर्ख है, सीधी है

तभी तो लुटा देती है वह भी
जो चीज़ उसे बेहद प्रिय है

माँ मूर्ख है तभी तो पिता के जाने पर
लुटा दिए जीवन के वे स्वर्णिम वर

हम चार भाई-बहनों के लिए
कहते हैं जो प्रिय होते हैं स्त्री को सबसे अधिक

पिता जब गए
माँ अपने यौवन के चरम पर थीं

कहा पड़ोसियों ने कि
नहीं ठहरेगी यह अब

उड़ जाएगी किसी सफ़ेद पंख वाले कबूतर के साथ
निकलते लोग दरवाज़े-से तो

झाँकते थे घर के भीतर तक, लेकिन
दरवाज़े पर ही टँगा दिख जाता

माँ की लाज-शरम का परदा
दिन बीतते गए और माँ लुटाती गई

जीवन के सब सुख, अपना यौवन
अपने रंग, अपनी खुशबू

हम बच्चों के लिए
माँएँ होती ही हैं मूर्ख जो

लुटा देती हैं अपने सब सुख
औरों की खुशी के लिए

माँएँ लुटाती हैं तो चलती है सृष्टि
इन समझदारों की दुनिया में

जहाँ कुछ भी करने से पहले
विचारा जाता है बार-बार

पृथ्वी को अपनी धुरी पर बनाए रखने के लिए
माँ का मूर्ख होना ज़रूरी है।

ज्योति चावला
हिंदी कवयित्री और कथाकार।

बेटी की गुल्लक

मेरी बेटी रोज़ सुबह उठती है
और नियम से अपनी गुल्लक में डालती
है सिक्के

इन सिक्कों की खनक से खिल जाती है
उसके चेहरे पर
एक बेहद मासूम-सी मुस्कान

वह नियम से डालती है अपनी गुल्लक में
सिक्के
ठीक ऐसे ही जैसे

नियम से निकलते हैं आसमान में
चाँद, सूरज और तारे

वह सोचती है कि एक दिन लेकर अपनी
गुल्लक
निकलेगी वह बाज़ार और

ख़रीद लाएगी अपनी पसंद के मुट्ठी भर तारे
ढेर सारी खुशियाँ और न जाने क्या कुछ

मैं उसके चेहरे पर खिली इस मुस्कान को
देखती हूँ हर सुबह
और उसकी मासूमियत पर मुस्कुरा देती हूँ

मेरी चार साल की मासूम बेटी नहीं जानती
मुद्रा, मुद्रास्फीति और विश्व बाज़ार के बारे
में कुछ भी

वह नहीं जानती कि क्यों दुनिया के तराजू
पर
गिर गया है रुपये का वज़न

वह इंतज़ार कर रही है उस दिन का
जिस दिन भर जाएगी उसकी गुल्लक इन
सिक्कों से और

वह निकलेगी घर से इन चमकते सिक्कों
को लिए
ख़रीदने चमकीले सपने

जानती हूँ मैं कि जिस दिन इन सिक्कों को
लिए
खड़ी होगी वह बाज़ार में

उसकी आँखों के कोरों में आँसुओं के
सिवाय कुछ नहीं होगा

मैं उसकी पलकों पर आँसू की बूँदों की
कल्पना करती हूँ
और बेहद उदास हो जाती हूँ।

मनुष्यता की होड़

ग्रीष्म से आकुल सबसे ज़्यादा
मनुष्य ही रहा

ताप न झेला गया तो
पहले छाँव तलाशी

फिर पूरे जड़ से ही छाँव उखाड़ ली
विटप मौन में

अपनी हत्या के
मूक साक्षी बने रहे

शीत से व्यग्र सबसे ज़्यादा
मनुष्य ही रहा

ठिठुरन पीड़ापूर्ण लगी तो
पहले आग खोजी

फिर पूरी तत्परता से सब जलाकर ताप गया
जिन पशुओं के आलिंगन में रात बिताई

सुबह उनकी ही खाल उधेड़कर ओढ़ने लगा
चौमास से उद्दिग्ध सबसे ज़्यादा

मनुष्य ही रहा
जिन वृष्टियों पर नियंत्रण नहीं रहा

उन्हें नकार दिया
बाँध बनाए और धारें मोड़ीं

गड्ढे खोदकर उनमें सीमेंट भरने वाला भी
मनुष्य ही रहा

और
मनुष्यता के चीथड़े उड़ाने वाला भी

मनुष्य ही
मनुष्य ने मनुष्य बनना ही सीखा

न कभी पेड़ बन पाया
न नदी

न मौसम
न पशु।

आदर्श भूषण
नई पीढ़ी के कवि-लेखक

ज्योतिषीय दृष्टि से भारत का राजनीतिक भविष्य

मोदी के बाद कौन?

राजनीति में बदलाव की आहट

देश के जाने-माने ज्योतिषाचार्य अशोक वासुदेव ने भारत की राजनीति को लेकर की बड़ी भविष्यवाणी। भारत श्री से ख़ास बातचीत में उन्होंने बताया कि आने वाले वर्षों में देश की सत्ता संरचना में बड़ा बदलाव संभव है। मोदी युग के बाद बीजेपी का नेतृत्व कौन करेगा, कांग्रेस का भविष्य क्या है और क्या वाकई भारत में राष्ट्रपति प्रणाली आ सकती है—पढ़िए पूरी रिपोर्ट।



राहुल गांधी का क्या भविष्य देखते हैं आप ?

राहुल गांधी की कुंडली के अनुसार उनकी वृश्चिक राशि है। उनमें फिलहाल न तो वह प्रभाव है जो एक राष्ट्रीय नेता से अपेक्षित होता है, न ही जनता में कोई खास उत्साह देखता हूँ। भारतीय राजनीति में स्थाई रूप से छाप छोड़ने के लिए व्यापक एक्शन, स्पष्ट रणनीति और जनसंवाद की कमी राहुल जी के पास दिखती है। ऐसे में वर्तमान में उनका प्रभाव बेहद सीमित है।

मोदी जी के बाद बीजेपी में कौन सा "स्पाक" लीडर उभर सकता है?

ज्योतिष के अनुसार, फिलहाल बीजेपी में दो नेता सबसे संभावित दिखते हैं। पहला योगी आदित्यनाथ। उनके पास स्पष्ट प्रभावशाली ऊर्जा और जनता में संवाद की क्षमता है। दूसरा अनुराग ठाकुर। हिमाचल प्रदेश के सांसद, जिन्हें मैं 2037 के आसपास एक प्रभावशाली नेता के रूप में देखता हूँ। उनकी कुंडली में भविष्य में बड़ा स्तर पर बढ़त दिख रही है।

आने वाले समय में देश की संरचना में बदलाव की आपकी भविष्यवाणी पर कुछ बताइए।

2031-32 के आसपास मेरी ज्योतिषीय दृष्टि ये संकेत देती है कि हम संविधान और भारतीय दंड संहिता में कुछ मौलिक बदलाव देख सकते हैं। भारत में संभव है कि राष्ट्रपति-प्रधान मंत्री वाले शासन का रूप ग्रहण करें, यानि प्रेसिडेंशियल फॉर्म ऑफ सरकार इसके पश्चात आसपास नेशनल यूनिटी-आधारित सरकार का उदय हो सकता है, जहाँ एक पार्टी

से नहीं, बल्कि गठबंधनात्मक सिस्टम से शासन होगा जैसा कि अमेरिका या कुछ यूरोपीय देशों में होता है।

वेस्ट बंगाल की राजनीति में ममता जी के जाने के बाद कौन आगे आ रहे हैं?

मैंने कुछ युवा नेताओं की कुंडली देखी है, जिनका जन्म 1980-1985 के बीच हुआ है। इनमें कुछ युवा और ऊर्जावान चेहरों की छवि prominent दिख रही है। फिलहाल शुभेंदु अधिकारी नहीं, पर कुछ युवा नेताओं पर मेरी ज्योतिषीय दृष्टि केंद्रित है, जो भविष्य में सत्ता में आएंगे। इसलिए मेरा अनुमान है कि वहाँ बीजेपी के कुछ युवा उम्मीदवार मजबूत स्थिति में आ सकते हैं।

राहुल गांधी को क्या बदलाव करने चाहिए?

ज्योतिष अनुसार राहुल गांधी की कुंडली में शिक्षा की कमी दिखती है—राजनीति का गहन अध्ययन, भारत की विविधता, गांधीवादी मार्ग-दर्शन और भारतीय ग्रामीण समाज की समझ। इसलिए मैं उन्हें सुझाव देता हूँ, पूरे भारत का भ्रमण करें, शहर से गांव तक शिक्षकों, बुद्धिजीवियों और आम जनता से संवाद बढ़ाएं। गांधीवादी आदर्शों को सीखें, जैसे गांधी जी ने 1906-1942 तक किया था, चार दशक भारतीय मिट्टी में रास लेकर। इनसे उन्हें राजनीति में स्थिर पहचान बनाने में मदद मिलेगी।



कुल मिलाकर, भारत की राजनीति के लिए आप क्या संक्षिप्त भविष्यवाणी देते हैं?

फिलहाल राहुल गांधी और कांग्रेस की स्थिति कमजोर है। मोदी के बाद मोदीतर युग में योगी आदित्यनाथ और अनुराग ठाकुर जैसे नेता उभर सकते हैं। 2031-32 में भारत का राजनीतिक स्वरूप बदल सकता है, संविधान और सरकार के रूप में बदलाव संभव है। भविष्य में गठबंधन/नेशनल गवर्नमेंट मॉडल की ओर राजनीति बढ़ सकती है। वेस्ट बंगाल में युवा चेहरों की वृद्धि होती दिख रही है। शुभेंदु अधिकारी अकेले मजबूत नहीं दिख रहे।

जनवरी से जून 2025

भारत में मौतें मातम और सबक

पिछले छह महीनों (जनवरी से जून 2025) में भारत में कई बड़े हादसों ने देश को झकझोर दिया। सड़क हादसे, रेल दुर्घटनाएँ, भगदड़, और कुछ अन्य घटनाएँ जैसे फैक्ट्री विस्फोट और पुल ढहना, इन सब ने मिलकर सैकड़ों जिंदगियाँ छीन लीं। यह लेख इन हादसों की एक संतुलित समीक्षा प्रस्तुत करता है, जिसमें हम उनकी संख्या, कारण, मृत्यु दर, और ऐतिहासिक तुलना को देखेंगे। साथ ही, हम इन घटनाओं को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, नैतिक, और व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करेंगे। हमारा मकसद है इन हादसों से सबक लेना और भविष्य में इन्हें रोकने के लिए रास्ते ढूँढना।

कितने बड़े हादसे हुए? गिनती और हकीकत

पिछले छह महीनों में भारत में बड़े हादसों की संख्या का सटीक आँकड़ा देना मुश्किल है क्योंकि “बड़ा हादसा” की परिभाषा अलग-अलग हो सकती है। फिर भी, उपलब्ध जानकारी के आधार पर हम कुछ बड़ी घटनाओं को गिन सकते हैं:

सड़क हादसे: सड़क हादसे भारत में हर दिन होते हैं। 2023 में देश में 4.80 लाख सड़क हादसे हुए, यानी औसतन 1,317 हादसे रोज। 2025 में भी यह ट्रेंड जारी रहा होगा, हालाँकि बड़े हादसों की सटीक संख्या नहीं मिली। कुछ बड़े हादसों में कई लोगों की मौत की खबरें आईं, जैसे भारी ट्रक या बसों से टक्कर।

रेल हादसे: एक RTI के जवाब में पता चला कि जनवरी से मई 2025 तक 18 बड़ी रेल दुर्घटनाएँ हुईं। इनमें से जलगाँव में जनवरी में हुआ हादसा (13 मौतें) सबसे चर्चित रहा।

भगदड़: दो बड़ी भगदड़ की घटनाएँ सामने आईं। महाकुंभ मेला (जनवरी) में 37 लोग मरे, और बेंगलुरु में एक स्टेडियम में 11 लोगों की मौत हुई। दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भी 18 लोगों की भगदड़ में मौत की खबर है।

अन्य हादसे: गुजरात में एक फैक्ट्री विस्फोट (21 मौतें), पुणे में पुल ढहना (38 लोग लापता), और उत्तराखंड में हेलिकॉप्टर क्रैश (7 मौतें) जैसी घटनाएँ भी हुईं। X पर अहमदाबाद में एक प्लेन क्रैश (241-275 मौतें) की बात हुई, लेकिन इसे कोई विश्वसनीय स्रोत पुष्टि नहीं करता, इसलिए इसे अनदेखा किया गया।

कुल अनुमान: इन सबको जोड़कर, लगभग 20-25 बड़े हादसे हुए, जिनमें 18 रेल हादसे, 2 भगदड़, और कुछ अन्य घटनाएँ शामिल हैं। सड़क हादसों की बड़ी संख्या को शामिल करना मुश्किल है, लेकिन ये हर दिन की हकीकत हैं।

हादसों की वजहें: इंसान, इंफ्रास्ट्रक्चर या इत्तेफाक?

हर हादसे की अपनी कहानी होती है, लेकिन कुछ कॉमन वजहें हैं जो बार-बार सामने आती हैं:

सड़क हादसे:

इंसानी गलती: 2023 के आँकड़ों के मुताबिक, 68.1% मौतें ओवर-स्पीडिंग की वजह से हुईं। रैश



ड्राइविंग, शराब पीकर गाड़ी चलाना, और ट्रैफिक नियम तोड़ना (जैसे हेलमेट या सीट बेल्ट न पहनना) बड़ी वजहें हैं। 54,000 लोग बिना हेलमेट और 16,000 बिना सीट बेल्ट के मरे। 34,000 हादसों में ड्राइवर के पास लाइसेंस ही नहीं था।

खराब सड़कें: गड्ढे, खराब साइनबोर्ड, और कमजोर क्रैश बैरियर सड़कों को खतरनाक बनाते हैं। फुट ओवरब्रिज और अंडरपास की कमी भी बड़ा इश्यू है।

ओवरलोडिंग: गाड़ियों में जरूरत ज्यादा वजन से 12,000 मौतें 2023 में हुईं।

रेल हादसे:

पुराना इंफ्रास्ट्रक्चर: खराब ट्रैक और सिग्नलिंग सिस्टम की वजह से 145 में से 200 बड़े रेल हादसे (2019-2024) डिरेलमेंट थे।

इंसानी गलती: गलत सिग्नलिंग और ऑपरेशनल मिस्टेक्स भी बड़ी वजह हैं।

भीड़ और ओवरलोड: ज्यादा भीड़ वाली ट्रेनें ट्रैक पर दबाव डालती हैं, जिससे हादसे बढ़ते हैं।

भगदड़:

खराब क्राउड मैनेजमेंट: महाकुंभ में गलत ऐलान से भगदड़ मची। बेंगलुरु में भी यही समस्या थी।

ज्यादा भीड़: बड़े धार्मिक या पब्लिक इवेंट्स में भीड़ कंट्रोल करना मुश्किल होता है।

अन्य हादसे:

फैक्ट्री विस्फोट: सेफ्टी नियमों की अनदेखी या मशीन फेल होना।

पुल ढहना: भारी बारिश और कमजोर स्ट्रक्चर।

हेलिकॉप्टर क्रैश: मौसम या मैकेनिकल फेलियर संभावित कारण।

निष्कर्ष: इंसानी गलतियाँ और खराब इंफ्रास्ट्रक्चर

हादसों की सबसे बड़ी वजह हैं। सेफ्टी नियमों की कमी और लापरवाही भी बड़ा रोल निभाती है।

कितनी जिंदगियाँ गईं? एक दर्दनाक आँकड़ा

2025 के पहले छह महीनों में हादसों से हुई मौतों का सटीक आँकड़ा उपलब्ध नहीं है, लेकिन अनुमान के आधार पर:

सड़क हादसे: 2023 में 1.72 लाख मौतें हुईं (474 रोज)। 2025 में भी यही ट्रेंड रहा तो ₹86,000 मौतें हुई होंगी, लेकिन इनमें से कितने “बड़े” हादसे हैं, यह साफ नहीं।

रेल हादसे: 18 हादसों में 100-200 मौतें अनुमानित हैं। जलगाँव में 13 लोग मरे, और बाकी हादसों में भी कम संख्या में मौतें हुईं।

भगदड़: महाकुंभ (37), बेंगलुरु (11), और दिल्ली स्टेशन (18) में कुल 66 मौतें।

अन्य हादसे: गुजरात फैक्ट्री विस्फोट (21), पहलगाम हमला (26, हादसा माना गया), उत्तराखंड हेलिकॉप्टर क्रैश (7), और पुणे पुल हादसा (38 लापता)।

अनवेरिफाइड प्लेन क्रैश: अहमदाबाद में 241-275 मौतों की बात X पर हुई, लेकिन पुष्टि नहीं हुई, इसलिए इसे शामिल नहीं किया गया।

कुल अनुमान: बिना प्लेन क्रैश के, ₹300-400 मौतें बड़े हादसों में हुईं। सड़क हादसों को जोड़ें तो यह संख्या बहुत बड़ी हो सकती है, लेकिन ज्यादातर सड़क हादसे छोटे-मोटे हैं।

पहले ऐसा हुआ है? इतिहास से तुलना

क्या 2025 के हादसे कुछ अलग थे, या यह भारत की पुरानी कहानी है? आइए देखें:

सड़क हादसे: 2014-2023 में 15.3 लाख लोग

मरे (₹1.5 लाख सालाना)। 2022 में 4.61 लाख और 2023 में 4.80 लाख हादसे हुए। 2025 का ट्रेंड भी ऐसा ही लगता है। कोई बड़ा बदलाव नहीं दिखता।

रेल हादसे: 2019-2024 में 200 बड़े हादसे हुए, जिनमें 351 लोग मरे। 2025 में 18 हादसे 5 महीनों में हुए, जो थोड़ा ज्यादा है, लेकिन कुल मिलाकर सामान्य है। 2023 का बालासोर हादसा (296 मौतें) एक बड़ा अपवाद था।

भगदड़: महाकुंभ (37 मौतें) और बेंगलुरु (11) की तुलना में 2024 का हाथरस भगदड़ (100+ मौतें) बड़ा था। भगदड़ भारत में बड़े इवेंट्स की पुरानी समस्या है।

अन्य हादसे: फैक्ट्री विस्फोट और पुल ढहना जैसी घटनाएँ पहले भी हुई हैं। 2025 में इनकी संख्या असामान्य नहीं है।

नैतिक सवाल: बार-बार होने वाले हादसे यह सवाल उठाते हैं कि क्या हम जिंदगियों की कीमत को गंभीरता से लेते हैं? सांस्कृतिक रूप से, भारत में “चलता है” वाला एटिट्यूड और सेफ्टी नियमों की अनदेखी बड़ी समस्या है। ऐतिहासिक रूप से, रेल और सड़क हादसे दशकों से चले आ रहे हैं, लेकिन सुधार की गति धीमी है।

क्या करें? व्यावहारिक उपाय और सबक

इन हादसों से बचने के लिए क्या किया जा सकता है? कुछ सुझाव:

सख्त ट्रैफिक नियम: ओवर-स्पीडिंग, ड्रक ड्राइविंग, और बिना लाइसेंस गाड़ी चलाने की सजा को और सख्त करना होगा। 2023 में 34,000 हादसे बिना लाइसेंस वालों की वजह से हुए।

बेटर इंफ्रास्ट्रक्चर: सड़कों में गड्ढे भरना, अच्छे साइनबोर्ड लगाना, और मजबूत क्रैश बैरियर बनाना जरूरी है। रेलवे के पुराने ट्रैक और सिग्नलिंग सिस्टम को अपग्रेड करना होगा।

क्राउड मैनेजमेंट: बड़े इवेंट्स में पुलिस और वॉलंटियर्स की ट्रेनिंग बढ़ानी होगी। महाकुंभ जैसी घटनाएँ इसकी कमी दिखाती हैं।

सेफ्टी कल्चर: स्कूलों और कॉलेजों में सेफ्टी एजुकेशन को बढ़ावा देना चाहिए। भारत में सेफ्टी को अक्सर “बोझ” माना जाता है, जिसे बदलना होगा।

इमरजेंसी सर्विसेज: हादसों के बाद तुरंत मेडिकल हेल्प और रेस्क्यू की जरूरत होती है। 4E मॉडल (Education, Engineering, Enforcement, Emergency Care) को फॉलो करना चाहिए।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण: भारत की तेजी से बढ़ती आबादी और मेगा इवेंट्स (जैसे कुंभ मेला) हादसों का रिस्क बढ़ाते हैं। हमें अपनी सांस्कृतिक आदतों, जैसे नियम तोड़ने की जल्दबाजी, को बदलना होगा।

नैतिक दृष्टिकोण: हर जिंदगी कीमती है। सरकार, समाज, और हर इंसान की जिम्मेदारी है कि इन हादसों को रोका जाए। क्या हम सेफ्टी को प्राथमिकता देंगे, या “चलता है” कहकर आगे बढ़ेंगे?

टॉमी जेनेसिस का विवादित वीडियो

हिंदू देवी और ईसाई चिन्ह के अपमान का आरोप

@ सुमित शुक्ल

20 जून 2025 को टॉमी जेनेसिस नाम के YouTube चैनल पर एक म्यूजिक वीडियो रिलीज हुआ। वीडियो रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर इसकी क्लिप्स कटने लगीं। यूजर्स का कहना है कि टॉमी ने हिंदू देवी और क्रिश्चियन धर्म दोनों का अपमान किया। वीडियो वायरल होने लगा और लोगों ने इसकी निंदा करना शुरू कर दिया।

टॉमी जेनेसिस नाम की महिला रैपर इस समय अपनी म्यूजिक वीडियो True Blue को लेकर आलोचनाओं का सामना कर रही हैं। इस वीडियो में टॉमी ने पूरी बाँडी को नीले रंग से पेंट किया है, सोने के गहने पहने हुए हैं और माथे पर लाल बिंदी लगाए नजर आ रही हैं। उन्होंने गोल्डन कलर की बिकनी पहनी हुई है और हाथ में क्रॉस साइन ले रखा है, जो क्रिश्चियन धर्म का धार्मिक चिन्ह है।

उसे अपने डांस मूव्स के दौरान इस तरह इस्तेमाल कर रही हैं जो व्यूअर्स को आपत्तिजनक लग रहा है। सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि टॉमी जल्द से जल्द इस वीडियो को हटाएं क्योंकि वह काली मां का अपमान कर रही हैं। टॉमी जेनेसिस का असली नाम यासमीन मोहन राज है। यासमीन की उम्र 34 साल है और वह तमिल मूल की स्वीडिश नागरिक हैं। टॉमी खुद को एक रिबेलियस आर्टिस्ट मानती हैं। अपने गानों में वह रेबेलियन, सेक्सुअलिटी और आइडेंटिटी जैसे मुद्दों को उठाती हैं।

जेनेसिस ने 2015 में Awful Records के साथ अपने करियर की शुरुआत की थी। वहीं उनका पहला मिक्स टेप World Vision आया था। 2017 में उन्होंने Downtown Records के साथ साइन किया और 2018 में अपना पहला एल्बम Tommy Genesis रिलीज किया। इसके बाद 2021 में उन्होंने अपना दूसरा एल्बम Goldilocks X निकाला। जेनेसिस सिर्फ रैपर ही नहीं बल्कि एक विजुअल आर्टिस्ट भी हैं। उन्होंने कनाडा की Emily Carr University of Art and Design से फिल्म और स्कल्चर की पढ़ाई की है। उनकी यूनिवर्सिटी की वजह से उन्हें Calvin Klein जैसे बड़े ब्रांड्स के साथ काम करने का मौका मिला।

2017 में उन्होंने मशहूर ब्रिटिश रैपर M.I.A. के साथ Mercedes Benz Fashion Week में भी परफॉर्म किया। रिपोर्ट्स के अनुसार, उनके पिता तमिल थे। एक मैगजीन को दिए इंटरव्यू में टॉमी बताती हैं, “जब मैं पैदा हुई, मेरी मां ने मेरा नाम जेनेसिस रखा। पापा पहले इसके खिलाफ थे। उन्हें डर था कि लोग मेरा मजाक उड़ाएंगे।”

उनके माता-पिता की मुलाकात चर्च में हुई थी। पापा भारत छोड़कर कनाडा आए थे जब वे बहुत छोटे थे। मेरे दादा साइंटिस्ट थे और दादी नर्स थीं। वो भारत के साउथ



में एक छोटे से गांव में रहते थे। उन्होंने अखबार में एक एड देखा था जिसमें कनाडा में साइंटिस्ट और नर्स की तलाश थी।

मेरे दादा-दादी दोनों कनाडा आए और तभी से मेरा पूरा परिवार वहीं बसा हुआ है। टॉमी के अनुसार, उनका परिवार नौकरी के कारण हमेशा शहर बदलता रहा। वो ज्यादातर समय कार में ही रहती थीं यानी कि एक तरह से बेघर। टॉमी की बहन वाइट थी जिसकी वजह से उसे प्रिविलेज मिला और उसे बुली नहीं किया जाता था जबकि टॉमी को स्कूल में उसकी ब्लैक स्किन की वजह से बुली किया जाता था।

वो स्कूल में पियानो बजाती थीं और 10 साल की उम्र में उन्होंने अपना पहला गाना भी लिखा था। टॉमी कहती हैं कि जब वह किंडरगार्टन में थीं, तभी से वह BDSM थीम पर पेंटिंग्स बना रही थीं। इंडिया से उनके कनेक्शन की बात करें तो टॉमी ने Sounding Off नाम की एक मैगजीन को बताया था कि उनके पूर्वज कभी हिंदू पुजारी थे लेकिन जब कुछ लोगों ने ईसाई धर्म अपना लिया तो उन्हें समाज से बाहर कर दिया गया।

यहां एक ट्रिविया है – साउथ इंडिया में ईसाई धर्म फैलाने वाले थे सेंट थॉमस। टॉमी खुद को एक “अनएक्सेप्टेड संतान” और “बाइसेक्सुअल रैपर” के तौर पर देखती हैं। टॉमी की पहली पसंद म्यूजिक नहीं थी इसलिए उन्होंने फिल्म की पढ़ाई की। आज भी टॉमी अपनी म्यूजिक वीडियोस को डायरेक्ट और एडिट करती हैं।

टॉमी कहती हैं कि “मैं बहुत निजी किस्म की इंसान हूं। अंदर से गर्व और शर्म दोनों एक साथ महसूस करती हूं। मुझे अपने बारे में बात करना पसंद नहीं है इसलिए मैं म्यूजिक बनाती हूं ताकि मुझे कुछ बोलना ना पड़े। मेरा मानना है अगर आर्ट को खुद बोलना नहीं आता तो वह आर्ट नहीं है। अगर किसी को उसका मतलब समझना पड़े तो वह खुद में नाकाम है।” मैंने रैप इसलिए शुरू किया क्योंकि मुझे लगा कि मैं गा नहीं सकती।”

टॉमी गा नहीं सकती थीं, इसलिए उन्होंने रैप शुरू किया और अब एक एस्टैब्लिश अंडरग्राउंड आर्टिस्ट हैं। जब उनका नया रैप True Blue आया तो रायता फैल गया। खुद रैपर्स भी इस पर सवाल उठा रहे हैं। सवाल रफ्तार ने भी उठाए, जो खुद एक रैपर हैं। रफ्तार ने Instagram पर वीडियो शेयर करते हुए लिखा कि इसे हिंदू धर्म का मजाक कहा जाना चाहिए। उन्होंने अपने फैंस से इस वीडियो को हर प्लेटफॉर्म पर ज्यादा से ज्यादा रिपोर्ट करने की अपील भी की है।

उन्होंने कहा कि यह सही नहीं है, इसे एक्सेप्ट नहीं किया जाएगा। उन्होंने वीडियो को फ्लैग करने का कारण बताते हुए कहा कि यह मेरे धर्म का मजाक है। ऐसा नहीं होना चाहिए। इस पोस्ट के बाद रफ्तार के फैंस लगातार इस वीडियो पर कमेंट कर रहे हैं। इस रैप को बॉयकाट करने की मांग उठ रही है।

टॉमी की तरफ से अभी तक इस पर कोई भी रिएक्शन सामने नहीं आया है। खैर, ऐसा पहली बार नहीं है जब

किसी सिंगर या रैपर को धर्म से जुड़ी चीजों का गलत इस्तेमाल करने पर आलोचना झेलनी पड़ी हो। मशहूर K-pop ग्रुप Blackpink को भी ऐसी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था जब उन्होंने भगवान गणेश की मूर्ति को सिर्फ एक सजावट के तौर पर इस्तेमाल किया था।

इसके अलावा अमेरिकी सिंगर Madonna का गाना Like a Prayer भी विवादों में रहा। 1989 में रिलीज हुए इस गाने को उस समय कैथोलिक चर्च ने अपमानजनक बताया था। YouTube पर इस वीडियो के नीचे कई कमेंट्स आ रहे हैं। एक यूजर का कहना है कि “किसी के धर्म का मजाक उड़ाने के लिए गाना बनाना आपको बोल्ट नहीं बनाता, यह आपको म्यूजिक के पीछे छिपा एक बुली बनाता है।”

लेकिन सवाल यह है कि टॉमी ने जिस तरह का वीडियो बनाया है, वह क्या एक सोची समझी मार्केटिंग स्ट्रैटेजी है? क्योंकि PR is PR – इसमें गुड और बैड जैसी चीजें नहीं होतीं। विवाद हुआ, हजारों नए लोगों तक विवाद की खबरें पहुंचीं। लोगों को उत्सुकता हुई कि आखिर इस गाने में ऐसा है क्या? और इसी सवाल का जवाब तलाशने के लिए लोग गाना सच करते-करते वहां पहुंच गए। लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू भी है, जिसे खुद टॉमी ही एक्सप्लेन कर सकती हैं। उन्हें बताना चाहिए कि क्या उनके रैप के लिरिक्स और वीडियो के थीम में कोई मेलजोल है।



प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries